संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
१ मई २०१३
वर्ष : २२ अंक : ११
(निरंतर अंक : २४५)

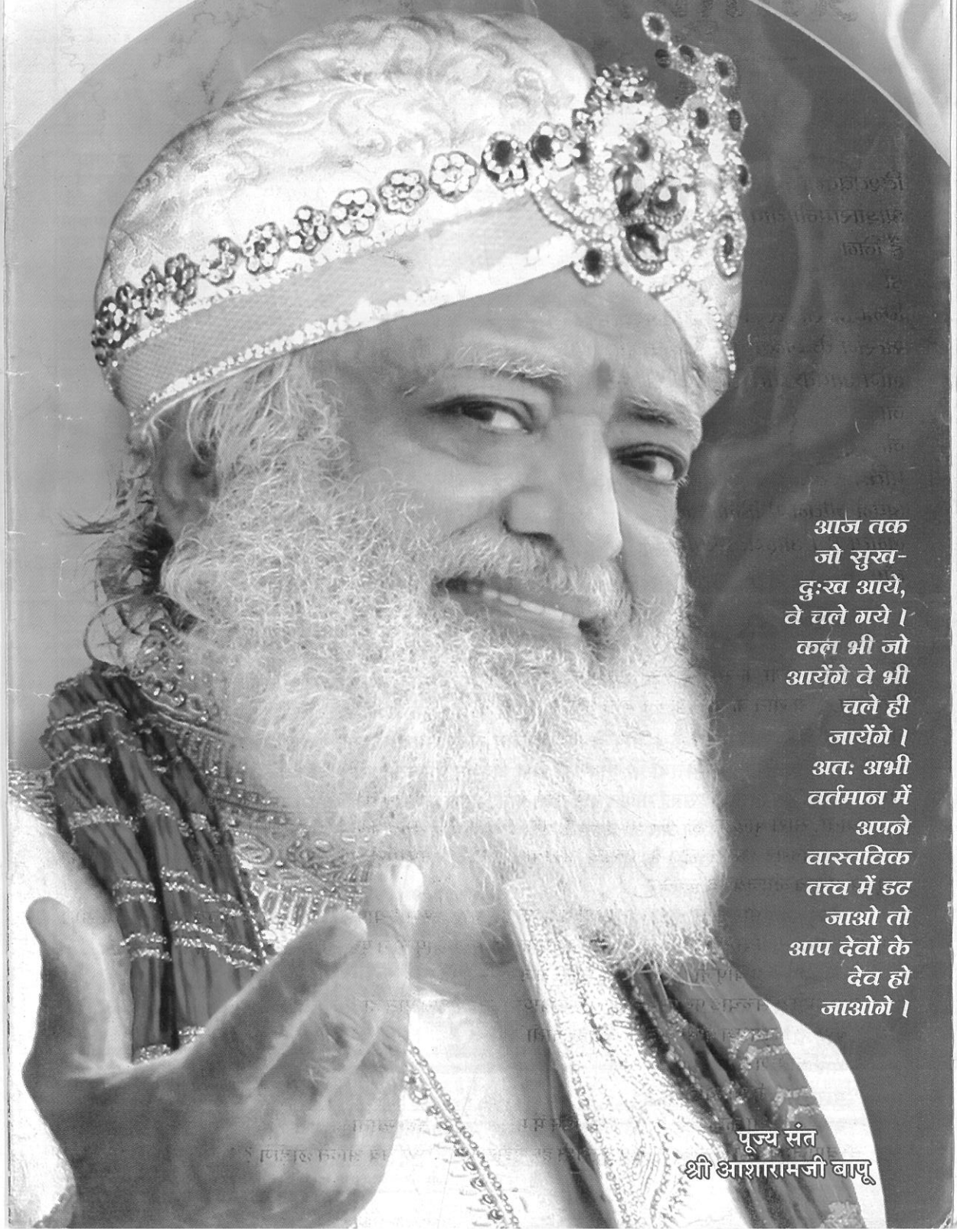

आज तक जो सुख-दुःख आये, वे चले गये । कल भी जो आयेंगे वे भी चले ही जायेंगे । अतः अभी वर्तमान में अपने वास्तविक तत्त्व में डट जाओ तो आप देवों के देव हो जाओगे ।

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

प्रेममूर्ति बापूजी

विश्ववंदनीय पूज्य संत श्री आशारामजी बापू एक ऐसी विभूति हैं जिनके प्रत्यक्ष दर्शन न भी हुए हों तो टीवी-प्रवचन, तस्वीर या बिना किसी तस्वीर केवल आपके सत्संग के शब्दों को पढ़कर भी लोग आपके प्रति सद्भाव से भर जाते हैं। आपकी छलकती सुनिर्मल जीवनगंगा पर दृष्टि डालनेमात्र से पवित्र प्रेरणा का अथाह महासागर अपने जीवन में हिलोरें लेने लगता है। आइये, प्रेरणा की बौछारों से करें अपने को पावन !

रखा मूँछ पर हाथ और जीवन बदल गया...

पूज्य बापूजी के साधक एक गीत गाते हैं : 'ये कैसा है जादू समझ में न आया, तेरे प्यार ने हमको जीना सिखाया...' ये गीत के बोल केवल बोल नहीं हैं, ये तो साधकों के अवर्णनीय अनुभवों को वर्णन में लाने का किया गया एक छोटा-सा प्रयास है। बापूजी के ईश्वरीय प्रेम, समर्थ करुणा-कृपा ने अनेक शिक्षित-अशिक्षित, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित व्यक्तियों के जीवन में ऐसा अद्भुत परिवर्तन ला दिया है कि बड़े-बड़े विद्वान, वैज्ञानिक आदि भी यह कैसे होता है इसका गणित नहीं लगा पाते। कभी लगा भी नहीं पायेंगे क्योंकि जहाँ सारे गणितों, सारे अनुसंधानों, सारी बुद्धियों का अंत आ जाता है, वहाँ से आत्मिक जगत का श्रीगणेश होता है।

उल्हासनगर (महाराष्ट्र) के प्रसिद्ध अखबार 'दैनिक धनुषधारी' के सम्पादक श्री दिलीप लालवानी का अनुभव ही देख लीजिये। वे कहते हैं :

"मैं भगवान और संतों को मानता नहीं था। लेकिन एक बार माल्यार्पण के निमित्त से मैं बड़े अभिमान के साथ बापूजी के मंच पर गया। मेरी जेब में सिगरेट का पैकेट देखकर बापूजी ने पूछा : "सिगरेट पीते हो ?"

मैंने कहा : "हाँ बापूजी ! १५ से २० पैकेट रोज पीता हूँ।"

बापूजी मेरी सच्चाई पर प्रसन्न हुए : "शाबाश ! और शराब पीते हो ?"

"बापूजी ! लगभग पौनी बोतल रोज हो जाती है।"

"भाई शाबाश !"

"मांस-मछली भी खाते हो ?"

"बापूजी ! ऐसा कोई दिन नहीं है जिस दिन मैं मांस-मछली नहीं खाता हूँ।"

तो बापूजी ने बड़ी करुणा से कृपा बरसाते हुए मुझसे पूछा : "ये सब आदतें छोड़ोगे ?"

(शेष पृष्ठ ९ पर)

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २२ अंक : ११
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४५)
१ मई २०१३ मूल्य : ₹ ६
वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद - ३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

इस अंक में...

(१) प्रेममूर्ति बापूजी २
(२) गुरु संदेश ४
* संस्कार ही सही और गलत राह पर ले जाते हैं
(३) युवा जागृति संदेश ६
* मौत के तख्त पर, फाँसी के वक्त पर
(४) सुखमय जीवन के सोपान ७
* स्वाति के मोती
(५) सत्संग पराग ८
* जानो उसको जिसकी है 'हाँ' में 'हाँ'
(६) विद्यार्थियों के लिए ११
* आत्मविकास के १५ साधन
(७) भगवन्नाम महिमा १२
* मंत्रजप से शुद्ध होते हैं जन्मकुंडली के बारह स्थान
(८) शास्त्र प्रसाद १४
* गुरु बिन संशय ना मिटे
(९) जीवन पथदर्शन १६
* हजार एकादशियों का फल देनेवाला व्रत
(१०) सुभाषित रत्नावली १७
(११) राष्ट्र जागृति १८
* हिन्दुओ ! संगठित होकर अपने धर्म की रक्षा करो
(१२) परिप्रश्नेन... १९
(१३) मधुर संस्मरण २०
* पूज्य बापूजी व मित्रसंत
(१४) नारी ! तू नारायणी... २२
* पापी का जूता, पापी के ही सर...
(१५) संयम की शक्ति २४
* ब्रह्मचर्य का अर्थ
(१६) साधना प्रकाश २५
* सद्गुरु से क्या सीखें ?
* सुख-सम्पदा और श्रेय की प्राप्ति
(१७) संकल्पशक्ति २७
* ...तो आपके लिए सब सहज हो जायेगा
(१८) तत्त्व दर्शन २८
* गुणों के चक्र से परे हैं आप !
(१९) शरीर स्वास्थ्य २९
* नमक : उपकारक भी और अपकारक भी
(२०) वेद अमृत ३०
* आधे घंटे में मुसीबतों से मुक्ति
(२१) भक्तों के अनुभव ३१
* किस माँ का दूध पिया है...
* सबको निर्भय योग सिखायें...
(२२) सेवा संजीवनी ३२
* नरक से निकाला 'ऋषि प्रसाद' ने
(२३) संस्था समाचार ३३

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	आस्था	care WORLD	वरदान	अध्यात्म टीवी	सत्य	दिशा	मंगलमय चैनल
रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे व दोप. २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)	रोज सुबह ९-४० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज सुबह ९ बजे व रात्रि ८ बजे	रोज शाम ४-०० बजे	रोज दोपहर २-०० बजे	रोज सुबह ५-४० बजे	www.ashram.org पर उपलब्ध

* 'A2Z चैनल' बिग टीवी (चैनल नं. ४२५) पर उपलब्ध है। * 'आस्था चैनल' डिश टीवी (चैनल नं. ७६१), टाटा स्काई (चैनल नं. १८०), विडियोकान (चैनल नं. ६७७), डीडी डायरेक्ट+ (चैनल नं. ३०) और बिग टीवी (चैनल नं. ६५०) पर उपलब्ध है।
* 'दिशा चैनल' डिश टीवी (चैनल नं. ७५७), टाटा स्काई (चैनल नं. १८४) और डीडी डायरेक्ट+ (चैनल नं. १३) पर उपलब्ध है।
* 'मंगलमय चैनल' इंटरनेट पर www.ashram.org/live लिंक पर उपलब्ध है।

Opinions expressed in this magazine are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

संस्कार ही सही और गलत राह पर ले जाते हैं

- पूज्य बापूजी

जीवन में सावधानी नहीं है तो जिससे सुख मिलेगा उसके प्रति राग हो जायेगा और जिससे दुःख मिलेगा उसके प्रति द्वेष हो जायेगा। इससे अनजाने में ही चित्त में संस्कार जमा होते जायेंगे एवं वे ही संस्कार जन्म-मरण का कारण बन जायेंगे।

'यहाँ सुख होगा' ऐसी जब अंतःकरण में संस्कार की धारा चलती है तो ज्ञान तुमको उस कार्य में प्रवृत्त करता है। 'यहाँ दुःख होगा' ऐसी धारा होती है तो वहाँ से तुम निवृत्त होते हो। ज्ञान ही प्रवर्तक है, ज्ञान ही निवर्तक है। वस्तु, व्यक्ति, परिस्थितियाँ ये सुख और दुःख के ऊपरी-ऊपरी साधन हैं लेकिन सुख-दुःख का मूल कहाँ है इसका अगर ज्ञान हो जाय तो तुम शुद्ध ज्ञान में पहुँच जाओगे। प्रवृत्ति व निवृत्ति का ज्ञान मूल में तो आता है चैतन्य से लेकिन तुम्हारे संस्कारों की भूलों से वह ज्ञान ले-ले के इधर-उधर भटक के तुम पूरा कर देते हो। अगर ज्ञानस्वरूप ईश्वर के मूल में जाने की कुछ बुद्धि सूझ जाय, भूख जग जाय तो सारे सुखों का मूल अपना आत्मदेव है - परमेश्वर। जब अपने ही घर में खुदाई है, काबा का सिजदा कौन करे! काशी में कौन जाय!

दो व्यक्ति लड़ रहे हैं। क्यों लड़ रहे हैं? एक को है कि 'यह मेरा कुछ ले जायेगा।' दूसरे को है कि 'छीन लो।' तो भय लड़ रहा है, लोभ लड़ रहा है लेकिन ज्ञान दोनों में है। ज्ञानस्वरूप चेतन तो है लेकिन भय के संस्कार और लोभ के संस्कार लड़ा रहे हैं। ऐसे ही राग के संस्कार और द्वेष के संस्कार भी लड़ा रहे हैं।

राक्षसों को रावण के प्रति राग है और हनुमानजी के प्रति द्वेष है तो वे रामजी के विरुद्ध लड़ाई करेंगे और हनुमानजी व बंदरों को रामजी के प्रति प्रेम है और राक्षसों के प्रति नाराजगी है तो वे राक्षसों से लड़ेंगे लेकिन लड़ने की सत्ता, ज्ञान तो वही-का-वही है। गीजर में तार गया तो पानी गरम होगा और फ्रिज में गया तो ठंडा लेकिन विद्युत तत्त्व वही-का-वही। **सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म।** वह सत्स्वरूप, ज्ञानस्वरूप और अंत न होनेवाला है, मरने के बाद भी ज्ञानस्वरूप आत्मदेव का अंत नहीं होता।

किसीके कर्म सात्त्विक होते हैं तो उसके संस्कार वैसे होंगे। जैसे - तुम्हारे कर्म सात्त्विक हैं तो सत्संग में आने का संस्कार, ज्ञान तुम्हें यहाँ ले आया। अगर शराबी-कबाबी होता तो बोलता : 'रविवार का दिन है, चलो भाई! शराबखाने में जायेंगे', पिक्चरबाज होता तो थिएटर में ले जाता। तो ज्ञान के आधार से संस्कार तुम्हें यहाँ-वहाँ ले जा रहे हैं।

तो कोई चीज बुरी और भली कैसे? कि संस्कारों के अनुसार। मेरे सामने कोई तुलसी डाली हुई कुछ सात्त्विक चीज-वस्तु-प्रसाद ले आता है तो मैं कहता हूँ : 'चलो भाई! थोड़ा रखो, थोड़ा ले जाओ' लेकिन यदि कोई मांस, मदिरा, अंडा आदि ले आयेगा तो मैं कहूँगा : 'ए... बेवकूफ है क्या? यह क्या ले आया!' लेकिन वही चीज शराबी-कबाबी के पास ले जाओ तो बोलेगा : 'यार! उस्ताद!! आज तो सुभान-अल्लाह है।' और मेरा प्रसाद ले जाओगे तो बोलेगा : 'अरे छोड़!

बाबा लोगों की क्या बात करता है, यह आमलेट पड़ा है, मैं मौज मार रहा हूँ।'

तो उसके तामस, नीच संस्कार हैं तो उसका ज्ञान नीचा हो जाता है। यदि मध्यम संस्कार हैं तो उसका ज्ञान मध्यम हो जाता है और उत्तम संस्कार हैं तो उसका ज्ञान उत्तम हो जाता है। यदि भगवदीय संस्कार हैं तो उसका ज्ञान भगवन्मय हो जाता है और ब्रह्मज्ञान के संस्कार हैं तो उसका ज्ञान अपने मूल स्वभाव को जनाकर उसे मुक्तात्मा, महान आत्मा बना देता है, साक्षात्कार करा देता है।

जो कुछ परिवर्तन और प्राप्ति है वह मनुष्य-जीवन में ही है। जो किसी विघ्न-बाधा के आने पर सोचता है : 'यहाँ से चला जाऊँ, भाग जाऊँ...', वह आदमी अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता। वह कायर है, कायर ! हतभागी है। **मन्दाः सुमन्दमतयाः**। वे ही हलके संस्कार अगर आगे आते हैं तो हलका प्रकाश होता है। जैसे बरसात तो वही-की-वही लेकिन कीचड़ में पड़ती है तो दलदल हो जाती है, सड़क पर पड़ती है तो डीजल और गोबर के दाग धोती है, खेत में पड़ती है तो धान हो जाता है और स्वाति नक्षत्र के दिनों में सीप में पड़ती है तो मोती हो जाती है। पानी तो वही-का-वही लेकिन सम्पर्क कैसा होता है ? जैसा सम्पर्क वैसा लाभ होता है। ऐसे ही ज्ञान तो वही-का-वही लेकिन संस्कार कैसे हैं ? संस्कार अगर दिव्य होते जायें तो ज्ञान की दिव्यता का फायदा मिलेगा। संस्कार दिव्य कहाँ से होते हैं ?

दुनियादारी में तो दिव्य संस्कार आते ही नहीं हैं। राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभवाले ही संस्कार आते हैं। तो बोले : 'ध्यान-भजन करें।'

ध्यान-भजन दुनियादारी से तो अच्छा है, इससे बुद्धि तो अच्छी होती है लेकिन इससे भी ऊँची बात है सत्संग।

तन सुखाय पिंजर कियो, धरे रैन दिन ध्यान।

ध्यान अच्छा तो है, दिन-रात कोई ध्यान कर ले लेकिन -

तुलसी मिटे न वासना, बिना विचारे ज्ञान ॥

वासना इधर-उधर भटकाती है। एकाग्र होने के बाद भी संकल्प करके आदमी दिव्य लोकों में और दिव्य भोगों में उलझ सकता है, इसीलिए उसको सत्संग चाहिए और सत्संग से ज्ञान के दिव्य संस्कार जागृत होते हैं। इसलिए बोलते हैं :

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥

अर्थात् स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाय तो भी वे सब मिलकर दूसरे पलड़े पर रखे हुए उस सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो क्षणमात्र के सत्संग से मिलता है। **(श्रीरामचरित. सुं.कां. : ४)**

सो जानब सतसंग प्रभाऊ।
लोकहुँ बेद न आन उपाऊ ॥ ❑

लगाम पकड़कर यात्रा करो

- पूज्य बापूजी

तुम्हारे पास राज्य है, धन है, उसके लिए मना नहीं है लेकिन तुम उनके लिए नहीं हो, तुम स्वतंत्र हो। उनके बिना भी तुम रहते हो। उनका तुम उपयोग करो। वे तुम्हारा उपयोग न करें, वे तुम पर हावी न हो जायें। तुम घोड़े की लगाम पकड़कर यात्रा करो तो शास्त्र सहमत हैं। भगवान राम को अयोध्या का राज्य था, भगवान कृष्ण को द्वारिका थी। राजा जनक को मिथिला थी। पहले ऋषि-मुनियों के पास इतनी सम्पदा होती थी कि राजा राजकोष की या आर्थिक तंगी से जूझता तो ऋषि उनको ऋण देते थे। अतः आप भी संसार का उपयोग करो, उपभोग नहीं।

मौत के तख्त पर, फाँसी के वक्त पर

- पूज्य बापूजी

एक ऐसा लड़का था जो कमजोरी के कारण विद्यालय से आते-जाते धरती पकड़कर बैठ जाता था। उसकी विद्यालय में गंदे लोगों से दोस्ती हो गयी थी । वह लड़का दिन में ४०-५० सिगरेट पीता था, जिससे उसकी धातु व बुद्धि कमजोर हो गयी थी। अब गिरे, अब मरे !

वहीं दूसरी ओर एक लड़का बड़ा प्रसन्न रहता, अच्छे अंक लाता था। उसने उस तेजस्वी विद्यार्थी से पूछा : ''तू इतना लाल टमाटर जैसा, इतना तंदुरुस्त है, तू क्या खाता है ?''

वह बोला : ''मैं भी वही खाता हूँ रोटी-सब्जी लेकिन मैं सुबह जल्दी उठता हूँ, सर्दियों में भी सुबह खुले बदन घूमता हूँ और सूर्यनमस्कार करता हूँ तो मेरा शरीर मजबूत है। फिर श्वास को सवा से डेढ़ मिनट तक अंदर तथा ५०-६० सेकंड तक बाहर रोककर गुरुमंत्र का जप करता हूँ, जिससे मनोबल, प्राणबल, बुद्धिबल बढ़ता है।''

''मुझे अपने गुरुजी के पास ले चलो न ! मैं तुम्हारा उपकार नहीं भूलूँगा।''

वह लड़का उस तेजस्वी विद्यार्थी के साथ सोमदेवजी के पास जाकर सच्चाई से बोला कि ''गुरुजी ! मैं निगुरा, सिगरेट पी-पीकर खोखला हो गया हूँ। तृतीय श्रेणी में पास होता हूँ। मैं अब जिंदगी में कुछ नहीं कर सकता हूँ। गुरुजी ! मुझे तो मर जाने के विचार आते हैं।''

गुरुजी बोले : ''बेटे ! बुरी आदतें तेरे मन में हैं। बुरी आदत का कुप्रभाव तेरे तन पर है। तू तो अमर आत्मा है। ॐ... ॐ... ॐ ... तू चैतन्य है। तू अपने को कोस मत। जब गुरु के पास पहुँच गया तो पुण्य है तभी न ! पापी होता तो गुरु के पास पहुँचता क्या ?''

उस लड़के के जीवन में मानो एक आध्यात्मिक चेतना का संचार हो गया । सोमदेव वास्तव में देव थे क्योंकि आत्मसाक्षात्कारी पुरुष भगवत्स्वरूप होते हैं। उनके दर्शन करने से पापियों के पाप मिटते हैं, हारों को हिम्मत मिलती है, व्यसनियों के व्यसन छूटते हैं।

सत्संग में आते-आते बाप-रे-बाप ! वह लड़का तो मजबूत हुआ और ऐसा बुद्धिमान हुआ कि गुरुजी के सत्संग को बस सुनता और एकटक गुरुजी को देखता, मानो वह गुरुजी की कृपा को पी रहा है । 'मेरे गुरुजी आनंदस्वरूप हैं, चेतनस्वरूप हैं, साक्षी हैं, मेरे गुरु अमर आत्मा, ब्रह्मस्वरूप हैं। मेरे गुरुजी शरीर में होते हुए सभी शरीरों के आत्मा हैं। ब्रह्मा-विष्णु-महेश के भी आत्मस्वरूप मेरे गुरुदेव हैं।'

सिगरेट छूट गयी, प्राणायाम से फेफड़ों की शक्ति विकसित हो गयी। गुरुमंत्र से बुद्धि भी बढ़ गयी । गीता, उपनिषदों के ज्ञान से वह बालक ऐसा तो मजबूत हो गया कि उसने स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिये। वह लड़का और कोई नहीं, रामप्रसाद बिस्मिल था।

बिस्मिल स्वतंत्रता सेनानियों को हिम्मत देता, साहस देता, 'अंग्रेजों का तख्ता-पलट करो ! भारतीय संस्कृति सबसे महान है। इसमें भगवान को प्रकट करने की ताकत है । यह जीते-जी मुक्ति का अनुभव करानेवाली है।' ऐसा भाषण दे, ऐसा सत्संग सुनाये कि स्वतंत्रता सेनानियों के भी हौसले बुलंद हो गये।

अंग्रेजों ने देखा कि यह एक लड़का पूरे ब्रिटिश शासन को भारी पड़ रहा है । इसने तो बड़ा संगठन बना दिया और सारे लड़के निर्भय

बना दिये हैं । युवानों ने आंदोलन चलाया, उसमें रामप्रसाद बिस्मिल और उसके साथियों को ब्रिटिश शासन ने षड्यंत्र करके अचानक पकड़ लिया और मुकदमा चलाकर उन्हें फाँसी की सजा सुना दी ।

सजा सुनकर वहाँ एकत्र हुए लोगों का तो मुँह उतर गया लेकिन रामप्रसाद समझते हैं कि 'फाँसी ! मुझे फाँसी कभी नहीं हो सकती । फाँसी होगी तो शरीर को होगी और भारत माता को आजाद कराने के लिए एक शरीर की बलि हुई तो क्या है ! हजारों-हजारों शरीरों में जो मैं चैतन्य आत्मा हूँ, ज्यों-का-त्यों रहूँगा । एक घड़ा फूटा तो क्या है ! हजारों-हजारों घड़े फूट जायें तो भी महाकाश का क्या बिगड़ता है ! **चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्...**

रामप्रसाद बिस्मिल की मौत के तख्त पर और फाँसी के वक्त पर भी आँखों में चमक थी । उन्होंने परमात्मा का स्मरण करते हुए **ॐ विश्वानि देव...** आदि वैदिक मंत्रों का पाठ किया । 'अस्त्र-शस्त्र से मरता नहीं 'मैं', अग्नि से 'मैं' जलाया नहीं जाता तो फाँसी मेरा क्या बिगाड़ देगी ? ॐ... ॐ... ॐ... हे भारतवासियो ! मौत शरीर को मारती है । तुम अमर आत्मा हो और अंग्रेजों को भगाकर ही दम लेना ।' - ऐसा पैगाम देते-देते रामप्रसाद बिस्मिल अंतरात्मा के राज्य में प्रविष्ट हो गया और शरीर को फाँसी लगी ।

कहाँ तो दुर्बल विद्यार्थी, रोज ४०-५० सिगरेट पीता था और कहाँ सोमदेव गुरु ने उसे इतिहास-प्रसिद्ध पुरुष बना दिया । जो गुरु के चरणों में जाता है वह तुच्छ-से-तुच्छ विद्यार्थी भी महान बनना चाहे तो उसके लिए आसान हो जाता है क्योंकि गुरु मंत्र देते हैं । गुरु प्राणायाम सिखाते हैं तो दोषों की और गंदी आदतों की ऐसी-तैसी हो जाती है तथा भगवान की उपासना और ध्यान करने से परमात्मा से आत्मीयता का संबंध बन जाता है । ❑

स्वाति के मोती

❋ कलियुग से बचने के लिए हरेक भाई-बहन को नल-दमयंती की कथा पढ़नी चाहिए । नल-दमयंती की कथा पढ़ने से कलियुग का असर नहीं होगा, बुद्धि शुद्ध होगी ।

❋ गाय की सेवा करने से सब कामनाएँ सिद्ध होती हैं । गाय को सहलाने से, उसकी पीठ आदि पर हाथ फेरने से वह प्रसन्न होती है । उसके प्रसन्न होने पर साधारण रोगों की तो बात ही क्या है, बड़े-बड़े असाध्य रोग भी मिट जाते हैं । असाध्य रोगों में लगभग ६-१२ महीने यह प्रयोग करना चाहिए ।

❋ कहीं जाते समय रास्ते में गाय आ जाय तो उसे अपनी दाहिनी तरफ करके निकालना चाहिए । दाहिनी तरफ करने से उसकी परिक्रमा हो जाती है ।

❋ रोगी व्यक्ति कुछ भी खा-पी न सके तो गेहूँ आदि अग्नि में डालकर उसका धुआँ देना चाहिए । उस धुएँ से रोगी को पुष्टि मिलती है ।

❋ मरणासन्न व्यक्ति के सिरहाने गीताजी रखें । दाह-संस्कार के समय उस ग्रंथ को गंगाजी में बहा दें, जलायें नहीं । मृतक के अग्नि-संस्कार की शुरुआत तुलसी की लकड़ियों से करें अथवा उसके शरीर पर थोड़ी-सी तुलसी की लकड़ियाँ बिछा दें, इससे दुर्गति से रक्षा होती है ।

❋ घर में किसीकी मृत्यु होने पर सत्संग, मंदिर और तीर्थ - इन तीनों में शोक नहीं रखना चाहिए अर्थात् इन तीनों जगह जरूर जाना चाहिए ।

जानो उसको जिसकी है 'हाँ' में 'हाँ'

- पूज्य बापूजी

संसार का सार शरीर है। शरीर का सार इन्द्रियाँ हैं। इन्द्रियों का सार प्राण हैं। प्राणों का सार मन है। मन का सार बुद्धि है। बुद्धि का सार अहं है, जीव है। जीव का सार चिदावली है और चिदावली का सार वह चैतन्य आत्मदेव है। उसी आत्मदेव से संवित् (वृत्ति) उठती है, फुरना (संकल्प) उठता है। उसीसे श्वास को भीतर भरने और बाहर फेंकने की प्रक्रिया होती है।

स्टोव कम्पनी का मालिक अथवा टायर-ट्यूब कम्पनी का मालिक खुद भी खड़ा हो जाय तो भी एक बार छिद्र होने पर न स्टोव जल सकता है, न ट्यूब गाड़ी के काम आ सकती है। छिद्र हो गया तो फिर उसमें हवा नहीं रुकती है। लेकिन हमारे शरीर में देखो तो नाक का छिद्र, मुँह का छिद्र, कान का छिद्र... इसमें नौ-नौ छिद्र हैं फिर भी कैसे वायु आती है, जाती है! इसमें तो नौ-नौ हैं फिर भी चल रहा है तो कैसी विलक्षण शक्ति है इस चैतन्यदेव की! श्वास खत्म हो जाते हैं तो आदमी मर जाता है। कैसे प्रारब्ध की व्यवस्था को सहयोग देता है!

यह देव सबको सहयोग देता है। चोरी करने का इरादा करो तो बुद्धि में वही ज्ञान का सहयोग देता है। साहूकार बनना है तो उसमें सहयोग देता है। 'वह दूर है - दूर है...' तो दूर ही लगेगा और सोचोगे कि 'वह मंदिर में है' तो मंदिर में ही दिखेगा। जैसा उसको मानो वैसा ही आपको सहयोग देता है 'हाँ' में। ॐ... 'बराबर है', ॐ... 'ठीक है।' ॐ मतलब 'हाँ', साधो! 'हाँ'। जैसे विद्युत है न, पंखे में लगा दो तो 'हाँ', ट्यूबलाइट में लगा दो... 'हाँ', टीवी में 'हाँ', गीजर में 'हाँ', फ्रिज में 'हाँ'... सत्ता देती है जहाँ भी लगा दो वहीं। गीजर में लगा दी, लो गरम पानी... फ्रिज में लगा दी, लो ठंडा पानी... टुल्लू में लगा दो, लो ऊपर पानी... हाँ भाई! जब भगवान की बनायी हुई विद्युत भी 'हाँ' में 'हाँ' कर देती है तो भगवान भी 'हाँ' में 'हाँ' करेंगे ही!

'श्रीविष्णुसहस्रनाम' में आता है : **भयकृत् भयनाशन**। भगवान भय पैदा करनेवाले भी हैं और भय का नाश करनेवाले भी हैं। पशु में भय पैदा कर देते हैं और शेर में गर्जना का बल भर देते हैं। रावण के पक्ष में लड़नेवालों को राम के पक्ष में लड़नेवालों के प्रति बल दे देते हैं और रामजी के पक्ष में लड़नेवालों को रावण के पक्षवालों को पीटने में बल दे देते हैं : लो लड़ो, मार दो इनको। यह कैसा देव है!

यह अंतर्यामी देव कहता है, 'यह प्रकृति में हो रहा है - दो नम्बर में। मैं एक नम्बर हूँ - सत्ता देता हूँ और दो नम्बर (प्रकृति) की लीला करता हूँ। जिससे देखा जाता है वह एक नम्बर मैं हूँ और जो दिखता है वह दो नम्बर मेरी शक्ति है। 'यह मेरा मन है, यह मेरा हाथ है, यह मेरा पैर है, यह मेरी बुद्धि है, यह मेरा अहं है...' ये सब दो नम्बर, मैं एक नम्बर।'

तो एक नम्बर देव 'मैं' में प्रीति करनी है, उसीमें विश्रांति पानी है, उसीका ज्ञान पाना है।

ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशेभ्यः।

उस देव को जाना तो सब पाशों से छूट जाओगे। आपको बड़ी भयंकर सजा सुना दी जाय, डर नहीं लगेगा। खूब निंदा कर दी जाय, आप विक्षिप्त नहीं होंगे; बाहर से दिखें तब भी भीतर गहराई में नहीं होंगे। जय-जयकार कर दी जाय, अभिमान नहीं आयेगा। उस देव को जाना तो सारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, भय, चिंता, शोक, मुसीबत, जन्म-मृत्यु, जरा-व्याधि

सब-का-सब टिकेगा ही नहीं । बहते पानी में जैसे उँगली लगाओ और अक्षर लिखते जाओ, हस्ताक्षर भी करते जाओ और मुहरें भी मारते जाओ, कुछ भी टिकेगा नहीं । ऐसे ही उस देव को जाना तो सारे कर्म ऐसे ही हो जायेंगे । जो कुछ भी कर्म आपने किये, उन कर्मों का कर्तृत्व नहीं रहेगा आपको; कर्मबंधन नहीं रहेगा, भोक्तृत्व नहीं रहेगा । सुखी-से दिखोगे लेकिन साधारण लोगों जैसा सुख नहीं रहेगा, दुःखी दिखोगे लेकिन साधारण लोगों जैसा दुःख नहीं रहेगा... आभासमात्र ! दुःखाभास, सुखाभास... जैसे रंगमंच पर सुखी-दुःखी दिखते हैं, 'हाय ! मैं तो मर गया... मेरा इकलौता बेटा चला गया । हाय-रे-हाय !' 'मेरी तो शादी हो गयी... आय-हाय !'

तो उस देव को जानो । उसको जानने के लिए ऐसे प्रश्न करो कि 'मैं क्या करूँ ? कैसे जानूँ ? हे देव ! तुम ही बताओ तो मैं कौन हूँ ? आप कौन हैं ? आपको जाननेवाला मैं कौन हूँ और आप जानने में आनेवाले देव कौन हो ?' ऐसा करके उस देव को प्रार्थना करो । अंदर से आवाज आ जाय, भीतर से । अरे ! भीतर से आवाज क्या आयेगी, पूछनेवाला धीरे-धीरे उसीमें शांत हो जायेगा... आनंद-ही-आनंद ! फिर क्या होता है उसका वाणी वर्णन नहीं कर सकती । ऐसा वह देव है ! कल्पना नहीं है, सचमुच में है । ऐसा नहीं समझना कि कल्पना है, ऐसा है - वैसा है... । हाँ, ध्यान में कुछ दिखा तो उसमें तो हो सकती है कल्पना लेकिन इस देव के वास्तविक स्वभाव के अनुभव में... ऐसा नहीं कि ध्यान में सब कल्पना ही होती है, ध्यान में तो आधिदैविक जगत के दृश्य भी दिखते हैं लेकिन यह देव तो वास्तविक देव है । आधिदैविक नहीं है, आधिभौतिक नहीं है, सबका आदि व सबका अंत... सबकी उत्पत्ति का और सबके प्रलय का स्थान है वह देव । वासुदेव, अच्युत देव... ॐ नारायण... नारायण... नारायण... ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ... ❑

(रंगीन मुखपृष्ठ २ से 'प्रेममूर्ति बापूजी' का शेष)

मैं तो नास्तिक था । मैंने उसी घमंड के लहजे में बापूजी से पूछा : ''क्या आप छुड़वा सकते हैं ?''

बापूजी ने विनोद करते हुए मुस्कराते हुए मुझे कहा : ''रखो मूँछ पर हाथ और कहो - आज से छोड़ दिया !''

तो मैंने भी कहा : ''चलो, छोड़ दिया ।''

बोले : ''अब तू पी के दिखाना ।''

दिन निकलते चले गये । सिगरेट भी नहीं, मांस-मछली व शराब भी नहीं ! दिन अच्छे बीतने लगे । मन आनंदित रहने लगा । मेरे को बड़ा अजीब लगा कि मैं पहले ५-१० मिनट भी बिना सिगरेट के रह नहीं पाता था... पानी या चाय पिऊँ तो सिगरेट चाहिए, नाश्ता करूँ, खाना खाऊँ तो सिगरेट चाहिए, सोने से पहले सिगरेट चाहिए, नींद से उठने के बाद पहले सिगरेट चाहिए... ऐसा मेरे जैसा चेन-स्मोकर बिना सिगरेट के चल रहा है ! यह मेरे जीवन की एक अद्भुत घटना है । मैंने शीघ्र ही बापूजी से दीक्षा ले ली ।

मैं समझता हूँ कि मेरी यह जिह्वा इस काबिल नहीं है कि मैं पूज्यश्री की बरसायी हुई कृपा का एक प्रतिशत भी अनुभव के रूप में बता सकूँ ।''

डॉन को डाँट

पूज्य बापूजी के सत्संग में आकर आपराधिक प्रवृत्तिवाले व्यक्तियों के मन भी बदल जाते हैं और वे भगवद्भक्त बन जाते हैं । एक बार बापूजी के पास चालू सत्संग में उस इलाके का एक बहुत बड़ा डॉन आया और चाय का ग्लास बापूजी के आगे करते हुए बोला : ''लो महाराज ! चाय पियो ।''

तब बापूजी ने उसे इशारे से बैठने को कहा लेकिन वह नहीं माना। उसने पुनः आग्रह किया तो डाँट चढ़ाते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''जा, बैठ जा !'' पहले क्षण तो उसे बड़ा झटका लगा। आँखें बड़ी करके घूर-घूरकर बापूजी की तरफ देखने लगा। उसकी आँखें घूरती रहीं और संत की आँखों से प्रेमभरी करुणा-कृपा बरसती रही।

निगाहों से वे निहाल हो जाते हैं,
जो ब्रह्मज्ञानी की निगाहों में आ जाते हैं।

वह सत्संग में बैठ गया तो ऐसा बैठा कि उसके दोष-दुर्गुण भी सदा-सदा के लिए बैठ गये और उसका जीवन ही बदल गया। करीब ३५ साल पहले सत्संगियों को विघ्नरूप बनने आया वह डॉन आज भी अहमदाबाद आश्रम में आता है और बड़े प्रेम व आदर से लोगों को सत्संग में बिठाने की सेवा करता है।

५ मिनट में दुनिया बदल गयी

पूज्य बापूजी के सत्संग में अगर कोई एक बार आकर बैठ जाय तो वह इनके ईश्वरीय प्रेमपाश में ऐसे बँध जाता है, ऐसा निमग्न हो जाता है मानो तलवार की धार माने जानेवाले ईश्वर-प्रेम के पथ ने नंदनवन का सुरम्य राजमार्ग बनकर स्वयं ही उसके लिए आनंद, माधुर्य व मुक्ति के रस का अखूट मयखाना खोल दिया हो ! फिर जीवन का रुख नीरस रुक्षता से सरस, स्निग्ध आत्मीयता की ओर हो जाता है।

क्षितीश सोनी नामक एक युवक प्रयाग के एक कॉलेज में पढ़ाई कर रहा था। वह संतों का खूब विरोध करता था। संतों के लिए कुछ-का-कुछ बोलता था, जहर उगलता था। इलाहाबाद में पूज्य बापूजी का सत्संग आयोजित हुआ तो उसने सोचा, 'चलो, ५ मिनट बैठते हैं।' वहाँ बैठा तो बैठ ही गया... वह कहता है : ''उसी क्षण मेरी वह दुर्मति कहाँ चली गयी मुझे पता नहीं। ५ मिनट में मेरे लिए यह दुनिया बदल गयी। दुनिया तो क्या बदली, नजर बदल गयी। और नजर बदल गयी तो नजारे अपने-आप बदल गये।

फिर मैंने अपने जीवन-उद्धारक पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा पाने का सौभाग्य प्राप्त किया। भगवत्पाद सद्गुरुदेवजी ने एक संत-निंदक, नास्तिक लड़के का जीवन-परिवर्तन कर उसे संतप्रेमी, आस्तिक, भगवद्भक्त बनाया। एक भैंसें चरानेवाले अति गरीब युवक को एयरक्राफ्ट इंजीनियर बना दिया, जो आज महीनेभर का करीब सवा दो लाख पाता है और अपनी खुद की एयरलाइन भी खोलनेवाला है।''

पत्रकार कई बार महाराजश्री को यह प्रश्न पूछ बैठते हैं कि ''बापूजी ! आपके पास कोई वशीकरण मंत्र है क्या ? इतने कुप्रचार के बावजूद सत्संग में लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है ! और लोग उठने का नाम तक नहीं लेते !''

पूज्यश्री कहते हैं : ''हाँ, मेरे पास वशीकरण मंत्र है। वह मंत्र है परमात्म-प्रेम। मैं सबसे खुले दिल से प्रेम करता हूँ और प्रेम करना सिखाता हूँ।'' तभी तो पूज्यश्री की एक झलक पाने के लिए हजारों दर्शनार्थी घंटों-घंटों सड़कों पर महाराजश्री की गाड़ी का इंतजार करते हैं और लाखों-लाखों भक्त-साधक सत्संग पंडाल में उनके दर्शन को लालायित रहते हैं। उस समय महाराजश्री के चिंतन में उनकी स्थिति ऐसी हो जाती है कि भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, आँधी-तूफान की भी क्या मजाल जो उन पर अपना प्रभाव डाल सके !

यह सब महाराजश्री के ईश्वरीय प्रेम का ही तो जादू है ! ❑

आत्मविकास के १५ साधन

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

(८) सदाचार : जैसा व्यवहार आप दूसरों से अपने प्रति नहीं चाहते हो, वही 'दुराचार' है। जैसा व्यवहार आप दूसरों से अपने प्रति चाहते हो, वही 'सदाचार' है। दूसरों को मान देना, आप अमानी रहना - यह सफलता की कुंजी है। झूठ-कपट, बेईमानी, दुराचार से नहीं, सदाचार से आत्मविकास होता है। बस, आप सत्कर्म करते रहो, सदाचारयुक्त जीवन जियो और अपने आत्मस्वभाव, 'सोऽहं' स्वभाव में स्थित होने का प्रयत्न करते जाओ, इसीसे आपका कल्याण होगा।

(९) सच्चाई का आचरण : सत्य, मधुर एवं हितकर वाणी से सद्गुणों का पोषण होता है, मन पवित्र व बुद्धि निर्मल बनती है। तुम्हारी वाणी में जितनी सच्चाई होगी उतनी ही तुम्हारी और तुम जिससे बात करते हो उसकी आध्यात्मिक उन्नति होगी।

(१०) संयम : जीवन के विकास का मूल संयम है। जिसके जीवन में संयम नहीं है, वह न तो स्वयं की ठीक से उन्नति कर पाता है और न ही समाज में कोई महान कार्य कर पाता है। हाथों-पैरों का संयम, वाणी का संयम, संकल्प-विकल्पों का संयम और ब्रह्मचर्य का पालन - इनसे आत्मविकास होता है। मौन है, नहीं बोलना है तो नहीं बोलना है। एकादशी है, अन्न नहीं खाना है तो नहीं खाना है। संकल्प-विकल्प रोकने के लिए बार-बार दीर्घ प्रणव का जप करना चाहिए। आश्रम की पुस्तक 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' में ब्रह्मचर्य के लिए निर्दिष्ट उपायों का अवलम्बन लेकर ब्रह्म-परमात्मा में पहुँचना चाहिए। सुबह जल्दी उठें, ध्यान-भजन करें, दीर्घ प्रणव का जप करें तो सत्त्वगुण बढ़ जाता है। इससे आत्मविकास होता है।

(११) अहिंसा : किसीको मन से, शरीर से, वचन से दुःख न पहुँचाना अहिंसा है।

(१२) दया : जो दूसरों का दुःख मिटाकर आनंद पाता है, उसको अपना दुःख मिटाने हेतु अलग से मेहनत नहीं करनी पड़ती। यदि तुम्हारा दिल परोपकार की भावना से ओतप्रोत हो, निर्भयता और निष्कामता से भरा हो तो प्रकृति तुम्हारे अनुकूल होने को तत्पर रहती है। इसीलिए सबके मंगल के लिए दयाभाव रखो।

(१३) सेवा : महापुरुषों, गुरुओं या किसीकी भी निःस्वार्थ सेवा से आत्मबल बढ़ता है। सेवा का अपना आनंद, औदार्य, पुण्य व प्रभाव है। ईमानदारी की सेवा से अंतःकरण शुद्ध होता है। सेवा में दिखावा न हो। आप लौकिक दुनिया में हों चाहे आध्यात्मिक जगत में, सेवा के बिना प्रगति सम्भव ही नहीं है।

(१४) न्याय : न्याय के पक्ष में रहने से भी आत्मबल बढ़ता है। स्वार्थरहित, कामनारहित होकर, दूसरों का हित हो यह ध्यान रख के न्याय करो तो आपको आत्मसंतोष मिलेगा। अपने लिए न्याय, औरों के लिए उदारता की नीति जो बर्तता है, उसका बड़प्पन खूब खिलता है।

(१५) परमात्म-प्रेम का विकास : प्रेम में अपनत्व होता है, विश्वास होता है, परमात्मा प्रेम से प्रकट होते हैं। बुद्धि में परमात्म-प्रेम की जागृति ही मनुष्य-जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। परमात्मा में, गुरु में प्रीति करने से आत्मबल, आत्मसुख बहुत बढ़ता है। जितना हम निष्काम, निःस्वार्थ, गुरुप्रेमी, प्रभुप्रेमी होते हैं, उतना ही हमारी बुद्धि में गुरु का, प्रभु का प्रसाद विकसित होता है।

तुम अगर चाहो तो अपने जीवन को उत्साह एवं तत्परता से भरकर भारत माता के महान सपूत बन सकते हो। तुम ठान लो, प्रतिभा विकसित करो। ईश्वर का असीम बल तुममें छुपा है। ॐ ॐ ॐ...

(समाप्त) ❑

मंत्रजप से शुद्ध होते हैं जन्मकुंडली के बारह स्थान

- पूज्य बापूजी

शास्त्रों में जन्मकुंडली के बारह स्थान बताये गये हैं । **एक करोड़ जप** पूरा होने पर उनमें से प्रथम स्थान - तनु स्थान शुद्ध होने लगता है । रजो-तमोगुण शांत होकर रोगबीजों व जन्म-मरण के बीजों का नाश होता है तथा शुभ स्वप्न आने लगते हैं । संतों, देवताओं व भगवान के दर्शन होने लगते हैं । कभी कम्पन होने लगेगा, कभी हास्य आने लगेगा, कभी नृत्य उभरेगा, कभी आप सोच नहीं सकते ऐसे-ऐसे रहस्य प्रकट होंगे । निगुरों के आगे इन रहस्यों को प्रकट नहीं करना चाहिए । रात को सोते समय कंठ में गुरुजी के साथ तादात्म्य करके सो गये तो गुरु-शिष्य का संबंध जुड़ जाता है । श्रद्धा तीव्र है तो संबंध जल्दी जुड़ता है अन्यथा दो-तीन महीने में जुड़ जाता है । स्वप्न में गुरु अथवा संत के दर्शन होने लगें तो समझो एक करोड़ जप का फल फलित हो गया ।

अगर **दो करोड़ जप** हुआ तो कुंडली का दूसरा स्थान - कुटुम्ब स्थान शुद्ध व प्रभावशाली हो जाता है । धन की प्राप्ति होगी, कुटुम्ब का वियोग नहीं होगा । समता, शांति व माधुर्य स्वाभाविक हो जायेगा । कुटुम्ब स्थान शुद्ध होने पर नौकरी व धनप्राप्ति के लिए भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी । जैसे व्यक्ति की छाया उसके पीछे चलती है, ऐसे ही धन और यश उसका दास होकर उसके पीछे चलेंगे ।

तीन करोड़ जप की संख्या पूरी होने पर जन्मकुंडली का तीसरा स्थान - पराक्रम स्थान, भ्रातृ स्थान या सहज स्थान शुद्ध हो जाता है, जाग जाता है । असाध्य कार्य आपके लिए साध्य हो जाता है । लोग आपको प्रेम करने लगेंगे, स्नेह करने लगेंगे । आपकी उपस्थितिमात्र से लोगों की प्रेमावृत्ति छलकने लगेगी ।

अगर **चार करोड़ जप** हो जाता है तो चौथा स्थान - सुख स्थान, मित्र स्थान शुद्ध हो जाता है । शरीर और मन के आघात नहीं के बराबर हो जायेंगे । मानसिक उपद्रव की घटनाएँ होंगी लेकिन आपका मन उन सबसे निर्लेप रहेगा । डरने की बात नहीं है कि चार करोड़ जप कब पूरा होगा । साधारण जगह पर जप की अपेक्षा तुलसी की क्यारी के नजदीक एक जप दस जप के बराबर होता है । देवालय अथवा आश्रम में प्राणायाम करके किया गया एक जप सौ गुना ज्यादा फल देता है । ब्रह्मवेत्ता गुरु के आगे किया गया एक जप हजारों गुना फल देता है । संयम, श्रद्धा, एकाग्रता व तत्परता जितने अंशों में मजबूत होंगे, जप उतना ज्यादा प्रभावी होगा । सोमवती अमावस्या और ऐसी मंगलमय तिथियों के दिनों में जप का फल १० हजार गुना हो जाता है । सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण में लाख गुना हो जाता है । दुष्कर्मों का त्याग करके किये गये जप का फल अनंत गुना हो जाता है ।

पाँच करोड़ जप पूरा होने पर पाँचवाँ स्थान - पुत्र स्थान शुद्ध हो जायेगा । अपुत्रवान को पुत्र हो जायेगा । अपुत्रवान को आप पुत्र देने की युक्ति सिद्ध कर लेंगे ।

छः करोड़ जप पूरा होने पर छठा स्थान - रिपु स्थान शुद्ध हो जायेगा । कोई आपसे शत्रुता नहीं रख सकेगा । किसीने शत्रुता की तो प्रकृति उसको

दंडित करेगी। शत्रु व रोग से आपको निपटना नहीं पड़ेगा, जप की शक्ति उससे निपटेगी।

सात करोड़ जप पूरा होने पर आपकी जन्मकुंडली का सातवाँ स्थान - स्त्री स्थान शुद्ध हो जाता है। आपकी शादी नहीं हो रही है तो शादी हो जायेगी। दूसरे की शादी नहीं हो रही है तो उसके लिए आपकी दुआ भी काम करने लगेगी। दाम्पत्य सुख अनुकूल होगा। आपके सभी रिश्तेदार, पत्नी, बच्चे, ससुराल पक्ष के लोग आपसे प्रसन्न रहने लगेंगे। आपको किसीको रिझाना नहीं पड़ेगा, सभी आपको रिझाने का मौका खोजते फिरेंगे। भगवद्-जप से आप इतने पावन होने लगेंगे ! फिर निर्णय क्यों नहीं करते कि 'मैं इसमें लग जाऊँ।' अभी से निर्णय करो कि 'मैं दो करोड़ की संख्या पूरी करूँगा।' तीन, चार, पाँच करोड़... जितने का भी हो, ठान लो बस।

अगर **आठ करोड़ जप** हो गया तो आठवाँ स्थान - मृत्यु स्थान शुद्ध हो जायेगा। फिर आपकी चाहे गाड़ियों, मोटरों अथवा जहाज या हेलिकॉप्टर से भयंकर दुर्घटना ही क्यों न हो लेकिन आपकी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती है। मृत्यु के दिन ही मृत्यु होगी, उसके पहले नहीं हो सकती। चाहे आप गौरांग की नाईं उछलते हुए दरियाई तूफान की लहरों में प्रेम से कूद जायें तो भी आपका बाल बाँका नहीं होगा।

आनंदमयी माँ बीच नर्मदा में नाव से कूद पड़ीं, तैरना नहीं जानती थीं फिर भी हयात रहीं। लालजी महाराज नर्मदा की बाढ़ में आ गये, वे तैरना नहीं जानते थे फिर भी उनकी जप-सत्ता ने मानो उनको पकड़ के किनारे कर दिया। मैंने ऐसे कई जप के धनियों को देखा भी है, शास्त्रों में पढ़ा-सुना भी है।

अगर **नौ करोड़ जप** हो जाय तो मंत्र के देवता जप करते ही आपके सामने प्रकट हो जायेंगे, वार्तालाप करेंगे। समर्थ रामदास के आगे सीताराम प्रकट हो जाते थे, तुकारामजी के आगे रुकोबा-विट्ठल (राधा-कृष्ण) प्रकट हो जाते थे, लालजी महाराज के सामने उनके इष्टदेव मंत्र जपते ही प्रकट हो जाते थे।

अगर **दस करोड़ जप** की संख्या पूरी कर ली तो जन्मकुंडली का दसवाँ स्थान - कर्म स्थान, पितृ स्थान शुद्ध हो जायेगा। दुष्कर्मों का नाश होगा और आपके सभी कर्म सत्कर्म हो जायेंगे। श्रीकृष्ण का युद्ध भी सत्कर्म हो जाता है, हनुमानजी का लंका जलाना भी सत्कर्म हो जाता है।

राम लखन जानकी, जय बोलो हनुमान की।

लंका जलायी तो कितने जल गये होंगे ! लेकिन हनुमानजी को दोष नहीं लगा।

अगर **ग्यारह करोड़ जप** हो गया तो ग्यारहवाँ स्थान - लाभ स्थान शुद्ध होता है। धन, घर, भूमि के तो लाभ सहज में होते जायेंगे। **सत्त्वात्संजायते ज्ञानम्...** परमात्म-ज्ञान का प्रकाश हो जायेगा।

अगर **बारह करोड़ जप** हो जाता है तो क्या कहना ! आपका बारहवाँ स्थान - व्यय स्थान शुद्ध हो जाता है। वह इतना शुद्ध हो जाता है कि अनावश्यक व्यय बंद हो जायेगा। रज-तम पूर्णतः शांत हो जायेंगे। सत्त्वगुण की जो सिद्धि है दर्शन-अदर्शन, वह प्राप्त हो जायेगी। मेरे सामने ऐसा हुआ था। मेरे सामने जा रहे थे संत। जैसे ही मैं देखने को दौड़ा तो उसी समय वे अदृश्य हो गये।

जिन्हें हरिभक्ति प्यारी हो,
माता-पिता सहजे छुटे संतान अरु नारी।

माता-पिता और पति-पत्नी की मोह-ममता छूट जाती है और उनमें भी भगवद्भाव आने लगता है। जिसको भगवद्भक्ति का रंग लगता है, उसका नजरिया बदल जाता है। विकारी नजरिये की जगह भगवद् नजरिया आ जाता है। ममता की जगह पर भगवान आ जाते हैं। मोह, स्वार्थ और विकार की जगह पर स्नेह और सच्चिदानंद छलकने लगता है। ❑

गुरु बिन संशय ना मिटे

(देवर्षि नारदजी जयंती : २६ मई)

नाभादासजी महाराज ने नारदजी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है कि 'देवर्षि नारदजी भगवान के मानस अवतार हैं, नवधा भक्ति के आचार्य हैं और परोपकार के लिए ही वे समस्त लोकों में भ्रमण करते हैं ।'

उनके उपदेश द्वारा ध्रुव, प्रह्लाद आदि भक्तों, जिज्ञासुओं, राजर्षियों, मुनियों आदि बहुतों को परमात्म-बोध हुआ । देवताओं, मनुष्यों तथा दानवों - सभीका वे हित चाहते हैं । सभी लोग उनका आदर भी करते थे, चाहे कोई राजा हो, देवराज इन्द्र हो, दानवराज रावण हो या फिर कंस । चिरंजीवी देवर्षि नारदजी ज्ञान के स्वरूप, भक्ति के सागर तथा विश्व के सहज हितकारी हैं ।

'महाभारत' में आता है कि पुंडरीक नामक एक विरक्त ब्राह्मण भगवान के भक्त थे । वे बड़े धर्मात्मा, सदाचारी, तपस्वी तथा कर्मकांड में निपुण थे । एक बार वे सभी तीर्थों में घूमते हुए शालग्राम क्षेत्र (वर्तमान हरिहर क्षेत्र) में पहुँचे और भगवान की आराधना में तल्लीन हो गये ।

देवर्षि नारदजी उनकी प्रभुप्रीति देखकर उनसे मिलने पधारे । पुंडरीक ने नारदजी की षोडशोपचार से पूजा की, फिर निवेदन किया : ''महामुने ! आज मैं धन्य हो गया, मेरा जन्म सफल हो गया । हे देवर्षि ! मैं एक संशय में पड़ा हूँ, उसे आप ही निवृत्त कर सकेंगे ।''

नारदजी बोले : ''क्या संशय है ?''

''कुछ लोग सांख्य की प्रशंसा करते हैं तो कुछ योग की तो कोई ज्ञान की महिमा गाते हैं । ऐसे ही कोई दान, कोई यज्ञ, कोई ध्यान और कोई अन्यान्य कर्मकांड के अंगों की प्रशंसा करते हैं । ऐसी दशा में मेरा चित्त इस कर्तव्य-अकर्तव्य के निर्णय में अत्यंत विमोह को प्राप्त हो रहा है कि करने योग्य क्या है ?''

नारदजी बड़े प्रसन्न हुए । बोले : ''पुंडरीक ! इस प्रकार का संशय एक बार मुझे भी हुआ था तो मैंने ब्रह्माजी से पूछा था । ब्रह्माजी ने मुझसे कहा था : ''नारद ! भगवान नारायण सर्वव्यापक परब्रह्म हैं । वे परब्रह्म परमात्मा ही सम्पूर्ण तत्त्व हैं, पर से भी परे हैं । उनके सिवा दूसरा कोई परात्पर तत्त्व नहीं है । उन्हींको वासुदेव, शिव, विष्णु तथा आत्मा कहते हैं ।

इस संसार में जो कुछ भी देखा-सुना जाता है, उसके बाहर-भीतर सर्वत्र वे ही व्याप्त हैं । समस्त शास्त्रों का बार-बार विचार करने पर यही सिद्ध हुआ है कि सदा सर्वव्यापक परब्रह्म परमात्मा के वास्तविक चिदानंदस्वरूप का ध्यान व चिंतन करना चाहिए । जो अजर, अमर, एक (अद्वितीय), ध्येय (ध्यान करने योग्य), अनादि, अनंत, सगुण, निर्गुण, सबके आदि कारण परमात्मा हैं, उनकी शरण लो ।

जो आलस्य छोड़कर दो घड़ी भी भगवान का चिंतन, भजन, सुमिरन व ध्यान करता है वह भी उत्तम गति को प्राप्त होता है, फिर जो निरंतर उन्हींके भजन में तत्पर रहता है, उसकी तो बात ही क्या ! जो मनुष्य अपना हित चाहता हो, वह सदा सद्गुरु के श्रीमुख से भगवान के स्वरूपज्ञान का श्रवण, मनन, स्तुति, सेवा और गुरुपूजन आदि के द्वारा सर्वदा ब्रह्मस्वरूप नारायण की आराधना करे । इस प्रकार भगवत्परायण होकर भजन में तत्पर रहनेवाला पुरुष पाप से लिप्त नहीं होता । वह सहस्र किरणोंवाले सूर्य की भाँति समस्त लोक

को पवित्र करनेवाला बन जाता है।

ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ, वानप्रस्थ हो या संन्यासी भगवान की शरण छोड़ देने पर ये कोई भी परम गति को प्राप्त नहीं होते। वेद, रामायण, महाभारत तथा सभी पुराणों के आदि, मध्य एवं अंत में एकमात्र उन्हीं प्रभु का यशोगान है। अतएव शीघ्र कल्याण की इच्छा रखनेवाले को व्यामोहक जगत के मायाजाल से सर्वथा बचकर तथा आलस्यरहित होकर **प्रसन्नतापूर्वक अनन्य भाव से उन परमात्मा का जप व ध्यान करना चाहिए।''**

पुंडरीक ! इस प्रकार जब ब्रह्माजी ने मेरा संशय दूर किया, तब मैं सर्वथा परमात्मपरायण हो गया। वास्तव में भगवान की महिमा अनंत है। कोई नृशंस, दुरात्मा, पापी ही क्यों न हो, परमात्मा का आश्रय लेने से वह भी मुक्त हो जाता है। यदि हजारों जन्मों के साधन से भी ऐसी बुद्धि उत्पन्न हो गयी तो उसका काम बन गया। भगवान की शरण से अगणित ब्रह्मर्षि, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, संन्यासी तथा वैष्णवगण परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। अतः तुम भी निःसंशय होकर उन्हींका अनन्य भाव से सुमिरन करो।'' इतना कहकर देवर्षि नारद अंतर्धान हो गये। भक्त पुंडरीक के मन में जो संशय था, वह गुरुकृपा से नष्ट हो गया।

संशय सबको खात है संशय सबका पीर।
संशय की फाँकी करे वह है संत-फकीर॥

शास्त्रों का शाब्दिक ज्ञान होना एक बात है और शास्त्रों के रहस्य का आत्मिक अनुभव होना विलक्षण बात है। नारदजी ऐसे ही संशय की फाँकी करनेवाले ब्रह्मवेत्ता समर्थ संत हैं। पुंडरीक सद्गुणी, सदाचारी थे, शास्त्रों का अध्ययन कर चुके थे परंतु बिना गुरुज्ञान के शास्त्रों के समुदायरूपी महाअरण्य में वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे। आद्य शंकराचार्यजी ने 'विवेक चूड़ामणि' में कहा है :

शास्त्रजालं महारण्यं चित्तभ्रमणस्य कारणम्।

सद्गुरु के बिना ये चित्त को भटकाने के हेतु बन जाते हैं। भोले बाबा ने भी कहा है :

निर्जीव सारे शास्त्र सच्चा,
मार्ग ही दिखलायँ हैं।
दृढ़ ग्रंथि चिज्जड़ खोलने की,
युक्ति नहीं बतलायँ हैं॥
निस्संग होने के सबब से,
ईश भी रुक जाय है।
गुरु गाँठ खोलन रीति तो,
गुरुदेव ही बतलाय हैं॥

अतः जब पुंडरीक की साधना-सेवा-तपस्या फली तो नारदजी मिले और उन्होंने सद्गुरु के रूप में उपदेश देकर उनके सब संशय दूर कर दिये, जिससे वे परम आनंद को प्राप्त हुए। ❑

हृदय बसा संसार तो 'हुर्रे' पक्की !

- पूज्य बापूजी

जगत का तो हाल ऐसा है जैसे होली के दिनों में बच्चे चौराहे पर कोई रुपया-सिक्का लगा देते हैं और छुप जाते हैं। कोई मुसाफिर गुजरता है। चाँदी का सिक्का देखा तो उठाने लगता है लेकिन वह तो चिपका हुआ है। जोर मारता है पर कील लगी हुई है। आखिर वह देखता है कि नहीं निकलेगा, तब भद्दा-सा मुँह लेकर चलने लगता है। इतने में वे छुपे हुए बच्चे 'हुर्रेऽऽऽ... हुर्रेऽऽऽ...' करने लगते हैं। बेचारा शर्मिंदा होकर जाता है।

ऐसे ही यह संसार होली के सिक्के जैसा है। कितना भी इकट्ठा करो, ले जाने का वक्त आता है तो सब छोड़कर चले जाना पड़ता है। हुर्रेऽऽऽ... हुर्रेऽऽऽ... ही रह जाता है। 'मेरे तीन मकान हैं, मेरे दो मकान हैं, मेरी पदोन्नति हो गयी...' यह सब होली के सिक्कों जैसा है।

लिखि-लिखि-लिखि जग लिखो,
पढ़ि-पढ़ि-पढ़ि क्या कीन्ह ?
तुलसी हृदय रघुवीर न चीन्हा,
तो विरथा जन्म लीन्ह॥

हजार एकादशियों का फल देनेवाला व्रत

(त्रिस्पृशा निर्जला एकादशी : २० जून)

युधिष्ठिर ने कहा : ''जनार्दन ! कृपया ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का वर्णन कीजिये ।''

भगवान श्रीकृष्ण बोले : ''राजन् ! उसका वर्णन परम धर्मात्मा सत्यवतीनंदन व्यासजी करेंगे ।''

तब वेदव्यासजी कहने लगे : ''दोनों ही पक्षों की एकादशियों के दिन मनुष्य भोजन न करे । द्वादशी के दिन स्नान आदि से पवित्र हो फूलों से भगवान केशव की पूजा करे । फिर नित्यकर्म समाप्त होने के पश्चात् पहले ब्राह्मणों को भोजन देकर अंत में स्वयं भोजन करे। राजन् ! जननाशौच और मरणाशौच में भी एकादशी को भोजन नहीं करना चाहिए ।''

भीमसेन : ''महाबुद्धिमान पितामह ! एक बार भोजन करके भी मुझसे व्रत नहीं किया जा सकता, फिर उपवास करके एकदम निराहार तो मैं रह ही कैसे सकता हूँ ! मेरे उदर में वृक नामक अग्नि सदा प्रज्वलित रहती है, अतः जब मैं बहुत अधिक खाता हूँ तभी यह शांत होती है । इसलिए महामुने ! मैं वर्षभर में केवल एक ही उपवास कर सकता हूँ । जिससे स्वर्ग की प्राप्ति सुलभ हो तथा मैं कल्याण का भागी हो सकूँ, ऐसा कोई एक व्रत निश्चय करके बताइये । मैं उसका यथोचित रूप से पालन करूँगा ।''

व्यासजी ने कहा : ''भीम ! ज्येष्ठ मास में सूर्य वृषभ राशि पर हो या मिथुन राशि पर, शुक्ल पक्ष में जो एकादशी हो, उसका यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करो । कुल्ला या आचमन के सिवाय किसी प्रकार का जल विद्वान पुरुष मुख में न डाले, अन्यथा व्रत भंग हो जाता है। एकादशी को सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन के सूर्योदय तक मनुष्य जल का त्याग करे तो यह व्रत पूर्ण होता है। तदनंतर द्वादशी को प्रभातकाल में स्नान करके सदाचारी ब्राह्मणों को विधिपूर्वक जल और सुवर्ण का दान करे । इस प्रकार सब कार्य पूरे करके जितेन्द्रिय पुरुष सदाचारी ब्राह्मणों के साथ भोजन करे । वर्षभर में जितनी एकादशियाँ होती हैं, उन सबका फल निर्जला एकादशी से मनुष्य प्राप्त कर लेता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है । शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाले भगवान केशव ने मुझसे कहा था कि 'यदि मानव सबको छोड़कर एकमात्र मेरी शरण में आ जाय और एकादशी को निराहार रहे तो वह सब पापों से छूट जाता है ।'

एकादशी व्रत करनेवाले पुरुष के पास दंड-पाशधारी भयंकर यमदूत नहीं जाते । अंतकाल में विष्णुदूत उस वैष्णव पुरुष को भगवान विष्णु के धाम में ले जाते हैं । अतः निर्जला एकादशी को पूर्ण यत्न करके उपवास और श्रीहरि का पूजन करो । मेरु पर्वत के बराबर महान पाप भी इस एकादशी व्रत के प्रभाव से भस्म हो जाते हैं । जो मनुष्य इस दिन जल के नियम का पालन करता है, उसे एक-एक प्रहर में कोटि-कोटि स्वर्णमुद्राएँ दान करने का फल प्राप्त होता सुना गया है । 'मनुष्य निर्जला एकादशी के दिन प्रातः पुण्यस्नान, दान, जप, होम आदि जो कुछ भी करता है, वह सब अक्षय होता है ।'- यह भगवान श्रीकृष्ण का कथन है । जो मनुष्य एकादशी के दिन अन्न खाता है, वह पाप का भोजन करता है । इस लोक में वह चांडाल के समान है और मरने पर दुर्गति को प्राप्त होता है । जो मनुष्य ज्येष्ठ मास के शुक्ल

पक्ष में एकादशी को उपवास करके दान करेंगे, वे परम पद को प्राप्त होंगे।''

(विस्तृत जानकारी के लिए आश्रम से प्रकाशित 'एकादशी व्रत कथाएँ' पुस्तक पढ़ें।)

'त्रिस्पृशा' का महायोग

एक 'त्रिस्पृशा एकादशी' के उपवास से एक हजार एकादशी व्रतों का फल प्राप्त होता है तथा इसी प्रकार द्वादशी में पारण करने पर हजार गुना फल माना गया है। इस एकादशी को रात में जागरण करनेवाला भगवान विष्णु के स्वरूप में लीन हो जाता है।

'पद्म पुराण' में आता है कि देवर्षि नारदजी ने भगवान शिवजी से कहा : ''सर्वेश्वर ! आप त्रिस्पृशा नामक व्रत का वर्णन कीजिये, जिसे सुनकर लोग कर्मबंधन से मुक्त हो जाते हैं।''

महादेवजी : ''विद्वन् ! देवाधिदेव भगवान ने मोक्षप्राप्ति के लिए इस व्रत की सृष्टि की है, इसीलिए इसे 'वैष्णवी तिथि' कहते हैं। भगवान माधव ने गंगाजी के पापमुक्ति के बारे में पूछने पर बताया था : ''जब एक ही दिन एकादशी, द्वादशी तथा रात्रि के अंतिम प्रहर में त्रयोदशी भी हो तो उसे 'त्रिस्पृशा' समझना चाहिए। यह तिथि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देनेवाली तथा सौ करोड़ तीर्थों से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस दिन भगवान के साथ सद्गुरु की पूजा करनी चाहिए।''

यह व्रत सम्पूर्ण पाप-राशियों का शमन करनेवाला, महान दुःखों का विनाशक और सम्पूर्ण कामनाओं का दाता है। इस त्रिस्पृशा के उपवास से ब्रह्महत्या जैसे महापाप भी नष्ट हो जाते हैं। हजार अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञों का फल मिलता है। यह व्रत करनेवाला पुरुष पितृ कुल, मातृ कुल तथा पत्नी कुल के सहित विष्णुलोक में प्रतिष्ठित होता है। इस दिन द्वादशाक्षर मंत्र **(ॐ नमो भगवते वासुदेवाय)** का जप करना चाहिए। जिसने इसका व्रत कर लिया उसने सम्पूर्ण व्रतों का अनुष्ठान कर लिया।'' ❑

सुभाषित रत्नावली

अकाले कृत्यमारब्धं कर्तुर्नार्थाय कल्पते।
तदेव काल आरब्धं महतेऽर्थाय कल्पते॥

'बेमौके पर शुरू किया हुआ काम करनेवाले के लिए लाभदायक नहीं होता और वही काम उपयुक्त समय पर आरम्भ किया जाय तो महान अर्थ का साधक हो जाता है।' **(महाभारत, शांति पर्व : १३८.९५)**

जरा रूपं हरति हि धैर्यमाशा
मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया।
क्रोधः श्रियं शीलमनार्यसेवा
ह्रियं कामः सर्वमेवाभिमानः॥

'बुढ़ापा रूप को, आशा धीरता को, मृत्यु प्राणों को, असूया (गुणों में दोष देखने का स्वभाव) धर्माचरण को, क्रोध लक्ष्मी को, नीच पुरुषों की सेवा सत्स्वभाव को, काम लज्जा को और अभिमान सर्वस्व को नष्ट कर देता है।'

(महाभारत, उद्योग पर्व : ३५.५०)

तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम्॥

'कर्म वही है जो बंधन का कारण न हो और विद्या भी वही है जो मुक्ति की साधिका हो। इसके अतिरिक्त और कर्म तो परिश्रमरूप तथा अन्य विद्याएँ कला-कौशल मात्र ही हैं।'

(विष्णु पुराण : १.१९.४१) ❑

(पृष्ठ १८ से 'हिन्दुओ ! संगठित होकर...' का शेष)

चिंता का विधान है ? लोग क्यों उन्हें अहिन्दू बनाने पर तुले हैं ? हिन्दुओ ! अपने धर्म की रक्षा करो। आपत्काल पर विचार करो और समय की प्रगति पर ध्यान दो।

संसार में हिन्दू जाति का दूसरा कोई देश नहीं है। अन्य जातियों के लिए तो दूसरे देश भी हैं पर हिन्दुओं के लिए केवल हिन्दुस्तान है। उनके लिए यही सर्वस्व है। यही उनकी मूर्तियों और मंदिरों का स्थान है। अतः इस देश में सुख-शांति स्थापित करने का दायित्व उन्हींका है।

('मालवीयजी के सपनों का भारत' से संकलित)

हिन्दुओ ! संगठित होकर अपने धर्म की रक्षा करो

– महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी

केवल व्यावसायिक उन्नति से ही किसी देश की जनता का सुख तथा समृद्धि सुरक्षित नहीं रह सकती। आचार की उन्नति करना आर्थिक उन्नति से कहीं अधिक महत्त्व रखता है । प्रत्येक राष्ट्र अपने धर्म को अपनाता है । हिन्दुओं को इससे विचलित नहीं होना चाहिए ।

समस्त संसार में हिन्दुओं की ही एक ऐसी जाति है, जिसने धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप दिया है। यही जाति पृथ्वी पर ऐसी रह गयी है जो वेद-शास्त्रों पर अगाध श्रद्धा रखती है। यही एक जाति है जो न केवल आत्मा की अमरता पर विश्वास रखती है बल्कि अनेकता में एकता को भी प्रत्यक्ष देखती है। ये ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों समस्त विश्व अपनाना चाहेगा, इनकी आवश्यकता का अनुभव करेगा; एक दिन उसे अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होना ही पड़ेगा। उस समय यही हिन्दू जाति उसे मार्ग दिखलायेगी। यदि यही मिट गयी तो क्या होगा ? मानव-जाति को फिर 'क, ख, ग...' से प्रारम्भ करना होगा ।

लोग इसका खंडन करते हैं बिना समझे-बूझे ही; वे इसके शास्त्रों का मजाक उड़ाते हैं बिना उनकी गहराई का अंदाजा किये हुए ही । वे इसकी उपेक्षा करते हैं, बिना भलीभाँति इसका अध्ययन किये हुए ही। आज तक किस विदेशी ने इसके मर्म को पहचाना है ? किसने इसका परिपूर्ण अवगाहन किया है ? यह तो विश्व का कर्तव्य है कि इस जाति की रक्षा करे ।

अरे, हिन्दुत्व का परित्याग करके भारतीय राष्ट्रीयता जीवित नहीं रह सकती। राष्ट्रीयता का आधार सुरक्षित रहना चाहिए। यहाँ न तो संकरता अभीष्ट है और न दुर्बलता क्योंकि आदर्श की प्रतिष्ठा उसके द्वारा ही होती है ।

उत्तमः सर्वधर्माणां हिन्दू धर्मोऽयमुच्यते ।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वलोकहितैषिभिः ॥

'सब धर्मों में हिन्दू धर्म उत्तम कहा गया है। सब हितैषी लोगों के द्वारा इसकी रक्षा की जानी चाहिए, इसका प्रचार किया जाना चाहिए ।'

हिन्दू धर्म की शिक्षा क्या है ? यह धर्म हमें औरों के मतों का मान करना सिखलाता है, सहनशील होना बतलाता है। यह किसी पर आक्रमण करने की शिक्षा नहीं देता पर साथ ही यह आदेश भी देता है कि यदि तुम्हारे धर्म पर कोई आक्रमण करे तो धर्म की रक्षा के लिए प्राण तक न्योछावर करने में संकोच न करो ।

पीपल के वृक्ष की तरह इस हिन्दू धर्म की जड़ें बहुत गहरी और दूर तक फैली हुई हैं। ऋषियों के तपोबल तथा केवल वायु एवं जल के आहार पर की गयी तपस्या ने इसकी रक्षा की और इसलिए यह कल्पलता आज भी हरी है। उन्हींकी तपस्या के कारण हिन्दू जाति आज भी जीवित है। अनगिनत जातियाँ यहाँ आयीं, हजारों हमले हुए परंतु परमात्मा की कृपा से हिन्दू धर्म आज भी जीवित है ।

आपको हिन्दू शक्ति को जगाना है जिससे कोई आप पर हाथ न उठाये, उस शक्ति को जगाना है कि जिससे आप पृथ्वी पर ऊँचा माथा करके इज्जत के साथ चल सकें। इसलिए हिन्दू संगठन की आवश्यकता है। **जो माई के सच्चे सपूत हैं, जो सोच सकते हैं, जिनका दिमाग अच्छा है, वे एक हों – संगठित हों ।**

कौन नहीं जानता की हिन्दू धर्म संसार के सब धर्मों में उदार है। इतनी उदारता और किसी धर्म में है ? किसी धर्म में भूतमात्र की **(शेष पृष्ठ १७ पर)**

प्रश्न : बड़े-में-बड़ी बुराई क्या है ?

पूज्य बापूजी : पराधीनता सबसे बड़ी बुराई है।

प्रश्न : क्या भगवान के अधीन नहीं हों ? गुरु के अधीन नहीं हों ?

पूज्य बापूजी : अरे ! भगवान और गुरु के अधीन होना यह सारी अधीनताओं को मिटाने की एक कुंजी है, वह अधीनता नहीं है। जैसे बच्चा माँ-बाप के अधीन होता है, नहीं तो न जाने कितने-कितनों के अधीन हो जाय। तो माँ-बाप की अधीनता बच्चे को सभी अधीनताओं से सुरक्षित करती है।

माता, पिता और गुरु के मार्गदर्शन में, कहने में चलना यह अधीनता नहीं है लेकिन विकारों के कहने में, दुष्कर्मों में चलना, बाहर से सुखी होने के लिए पापकर्म में चलना यह पराधीनता है।

प्रश्न : बुराईरहित कैसे होवें ?

पूज्य बापूजी : ईश्वर के नाते सभीको अपना मानना, बुराईरहित हो जाओगे। बुराई बड़ी पराधीनता है। बुराईवाला व्यक्ति खुद भी दुःखी होता है, दूसरों को भी दुःखी करता है और बुराईरहित व्यक्ति खुद भी सुखी होता है, दूसरों को भी सुखी करता है।

प्रश्न : डर लगता है, डर का नाश कैसे हो ?

पूज्यश्री : डर का नाश होगा ममता के त्याग से। 'हम मर जायेंगे, ऐसा हो जायेगा, ऐसा हो जायेगा...' ममता भगवान में रखो तो डर चला जायेगा। 'यह मकान मेरा है, यह शरीर मैं हूँ, फलाना हूँ...' इसीसे डर लगता है। डर लगता है मन को, आत्मा को डर नहीं होता।

प्रश्न : धन क्या है ?

पूज्य बापूजी : विवेक धन है, वैराग्य धन है, भगवत्शांति धन है, भगवत्प्रीति धन है। जब उत्पन्न हो तो उसी भाव की रक्षा करनी चाहिए।

प्रश्न : विवेक क्या है ?

पूज्य बापूजी : आत्मा अविनाशी है, जगत प्रतिकूल है, नाशवान है इसीको विवेक बोलते हैं :

अविनाशी आतम अमर जग तातै प्रतिकूल।
ऐसो ज्ञान विवेक है सब साधन को मूल ॥
(विचारसागर)

आत्मा अविनाशी है और जगत विनाशी है - सब साधनों का मूल है ऐसा ज्ञान, ऐसा विवेक। एक दिन सब छूट जायेगा, उसके पहले जो अछूट है उसको पाना चाहिए - यह विवेक है, यह धन है इसकी रक्षा करनी चाहिए। जिसको प्रभुप्राप्ति जल्दी करनी है, वह विचारसागर, एकनाथी भागवत, इनमें से कोई एक पढ़े - ध्यान करे, पढ़े - ध्यान करे, लग जाय। अच्छे काम करने का विचार आये तो गाँठ बाँधकर याद करके बार-बार उसी अच्छे काम में जल्दी लग जावे। अच्छे काम करके भगवान को अर्पण करे। बुरे काम का विचार आये तो 'अभी नहीं बाद में, अभी नहीं बाद में, बाद में...' ऐसा करने से बुरे काम से रक्षा होगी।

प्रश्न : भगवद्ज्ञान, भगवत्प्रेम में चलते हैं लेकिन सफल क्यों नहीं होते ?

पूज्य बापूजी : सात दुर्गुण हैं - एक तो श्रद्धा-विश्वास की कमी, दूसरा उत्साह की कमी, तीसरा विषय-चिंतन, चौथा कुसंग, पाँचवाँ सत्संग का अभाव, छठा दृढ़ निश्चय नहीं और सातवाँ लापरवाही। इन सात दुर्गुणों के कारण भगवद्ज्ञान, भगवत्प्रेम में चलते हैं लेकिन सफल नहीं हो पाते। ❑

पूज्य बापूजी व मित्रसंत

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

घाटवाले बाबा की शिष्या को ध्यान लगा

घाटवाले बाबा की एक डॉक्टर शिष्या थी। वह एकदम खास, निकट की चेली थी, भावुक थी। खूब भाव से बाबाजी की सेवा करती थी। बाबाजी वृद्ध थे तो शरीर की अवस्था अनुसार उनका मल-मूत्र आदि साफ करने में भी उसे संकोच नहीं रहता था, ऐसी वह भक्तानी थी। वह भक्तिमार्गी थी और घाटवाले बाबा ज्ञानमार्गी थे। एक दिन बाबाजी ने मुझे कहा : ''इस पर भी जरा शक्तिपात कर दो।''

मैंने उनकी सेविका से कहा : ''कल सुबह कुछ खाये-पिये बिना आ जाना, मैं भी आ जाऊँगा। दे दूँगा तुम्हें दीक्षा।''

दूसरे दिन वह महिला और उसका पति आये, बैठे। मैंने कहा : ''श्वासोच्छ्वास को देखो।''

महिला का पति तो आँखें बंद करे, फिर खोले लेकिन भक्तानी ने तो ईमानदारी से श्वासोच्छ्वास को देखा तो फिर मिल गयी उसको भगवत्प्रसादी। यह तो भगवान की लीला होती है... उसका तो वहीं ध्यान लग गया। ध्यान में वह हँसने लगी। फिर तो वह अपने घर में ही रोज २-२ घंटे ध्यान में बैठने लगी। अब उसका पति सोचने लगा कि 'यह तो घंटों तक ध्यान में बैठती है और उसका ध्यान भी लग जाता है, मेरा तो ध्यान लगता नहीं। बापूजी ने यह कैसे कर दिया ?'

बाद में घाटवाले बाबा ने मुझे पूछा : ''यह क्या कर दिया, उसे छुआ भी नहीं, सिर पर भी हाथ रखा नहीं, कोई बात भी की नहीं। केवल दृष्टि से ही कृपा बरसा दी ! यह सब कैसे हुआ ?''

मैंने विनोद में कहा : ''यह सब कैसे हुआ यह मैं क्यों बताऊँ ? पहले दीक्षा लो, मेरे चेले बनो। बाद में बात करो।''

बाबाजी : ''अच्छा जी ! दे दो दीक्षा।''

मैंने कहा : ''दक्षिणा रखो।''

बाबाजी ने किसी सेवक से कहा : ''अरे, नारियल ला।''

फिर बाबाजी ने मुझे कहा : ''लो गुरुजी, नारियल !''

मैंने कहा : ''यह तो आप मजाक कर रहे हो, सच्चे हृदय से चेले बनोगे तभी दीक्षा दूँगा।''

दीक्षा उनको क्या लेनी और मुझे उनको क्या देनी ! हम दोनों आपस में ऐसे खूब विनोद करते रहते थे।

साधु कैसे होने चाहिए ?

घाटवाले के पास एक आदमी आया और बोलने लगा : ''आजकल के साधु बड़ी-बड़ी डींग हाँकते हैं, लम्बे-चौड़े कपड़े पहन लेते हैं, संन्यासी हो जाते हैं, मठ बना लेते हैं और अपने को ज्ञानी मानते हैं। यह सब धतिंग है।''

ऐसी उसने आधे घंटे तक बकवास की। बाद में घाटवाले बाबा ने उसे जवाब दिया : ''साधु ऐसे होने चाहिए, वैसे होने चाहिए... वे साधु ऐसे हैं - वैसे हैं, कोई सच्चे ज्ञानी नहीं हैं... यह सब बोलता है तो तू जैसा मानता है कि ज्ञानी ऐसे होने चाहिए, वैसा तू खुद ही बनकर दिखा दे न ! बात ही पूरी हो जाय।''

ज्ञानियों पर, संतों-महापुरुषों पर आरोप मत करो। तुम्हारे से तो वे हजार गुना प्रसन्न होते हैं, हजार गुना मौज में होते हैं। तुम्हारे से तो उन्होंने हजार गुना आगे की यात्रा की होती है। पहले वहाँ तक तो तुम पहुँच के दिखाओ।

ज्ञानवान ऐसे होने चाहिए, वैसे होने चाहिए -

इस प्रकार द्वेष की आग में तपते रहोगे तो उलझ जाओगे। तुम्हारे थर्मामीटर से उन्हें नापोगे तो नहीं चलता है। ज्ञानवान द्वारा स्वाभाविक विनोदमात्र व्यवहार हो जाता है। ज्ञानवान महापुरुष जो भी करते हैं, भले हमें उस वक्त अयोग्य लगे परंतु उनके द्वारा जो भी होता है वह अच्छा ही होता है, सामनेवाले के हित का ही होता है।

साधु ते होइ न कारज हानी।

दुराग्रह

घाटवाले बाबा वेदांती संत थे। सत्संग में बार-बार कहते थे कि 'निर्भय रहो।' उनकी एक शिष्या ने बाबाजी की इस बात को पकड़ लिया। वह वृद्ध थी। दिल्ली से बाबाजी के पास आती थी। एक दिन खट्टे आम के पकौड़े बनाकर बाबाजी के पास लायी। बाबाजी ने कहा : ''मैंने अभी दूध पिया है। दूध के ऊपर पकौड़े नहीं खाने चाहिए।''

वह बोली : ''बाबाजी ! मैंने मेहनत करके आपके लिए ही बनाये हैं, खाइये न !''

बाबाजी : ''मेहनत करके बनाये हैं तो क्या मैं खाकर बीमार पड़ूँ ? नहीं खाने, ले जा।''

''बाबाजी ! कुछ भी हो, आज मैं खिलाकर ही रहूँगी।''

बाबाजी ने डाँटते हुए कहा : ''मतलब... ?''

''आपने ही तो कहा है कि निर्भय रहो। मैं निर्भय रहूँगी। आप चाहे कितना धमकायें, मैं तो खिलाकर ही रहूँगी।''

गुरु-शिष्या का यह संवाद मैं सुन रहा था। मैंने सोचा, 'राम... राम... राम... ! महापुरुष कैसी निर्भयता कह रहे हैं और मूढ़ लोग कैसी निर्भयता पकड़ लेते हैं !'

निर्भय होने का अर्थ यह नहीं है कि जो हमें निर्भय बनायें, उनका ही विरोध करके अपना एवं उनके जीवन का ह्रास करें। निर्भयता का अर्थ नकटा होना नहीं है, निर्भयता का अर्थ मन के गुलाम होना नहीं है, निर्भयता का अर्थ है निर्भय नारायण तत्त्व में जागने के लिए संसार के भय का अभाव ! (क्रमशः) □

ढूँढ़ो तो जानें

'श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्' के श्लोक क्र. ७७ व ७८ के आधार पर भगवान के 'श्री' से शुरू होनेवाले नामों को वर्ग-पहेली से ढूँढ़िये।

अनिवर्ती .....क्षेमकृच्छिवः।

श्रीवत्सवक्षाः ..... वरः॥

श्रीदः.....।

.....श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥

म	मी	ष्ट	मा	न	ज	दः	दि	ल	अ	र्थी	ति
द	श्री	कां	च	प	श्री	डी	पः	स	श्री	तु	घ
र	श	दा	श्री	क	र	सं	क्रां	वि	म्य	नि	अ
गी	र्णि	शः	ङ्क	घ	क्षा	कु	श्री	र	श्री	श	धिः
त्रि	क्ष	श	रा	व	सः	कु	म	वि	ष्ठ	णे	च्छि
रः	हा	व	पु	वा	ध	ली	तां	दी	भा	ग	चे
र	रः	ध	श्री	रु	शः	वे	पा	गु	रो	व	टी
ती	क	ड	रु	नि	म	श्री	डा	क	र्थ	गु	नः
यं	श्री	ज	य	भ	वा	के	मी	ल	श्री	पा	ड
ज	वा	ड़	प	डी	गु	सः	न	प	ल	ल	नः
ता	सः	र्थी	श्री	ग	ङ	ति	तिः	त	स	श्री	घ
गी	त	भ	चं	र	र्ष	मा	पि	र	बु	प	र

पुण्यदायी तिथियाँ

२१ मई : मोहिनी एकादशी (समस्त पापों का क्षय व सब प्रकार के दुःखों का निवारण)

२८ मई : मंगलवारी चतुर्थी (सूर्योदय से शाम ७-४९ तक)

४ जून : अपरा-जलक्रीड़ा-भद्रकाली एकादशी

१३ जून : गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से सुबह ७-५५ तक)

१५ जून : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३९ तक)

२० जून : त्रिस्पृशा निर्जला एकादशी (एक हजार एकादशियों का फल प्राप्त)

पापी का जूता, पापी के ही सर
संयम, सात्त्विक धैर्य का देखो असर

- पूज्य बापूजी

(गतांक का शेष)

मोकल सिंह ने कहा : ''वर पक्ष की ओर से कन्या को हीरे-मोती के गहने तथा कीमती कपड़े आदि भेजने का रिवाज है। इसको हमारे यहाँ 'सुमूहुर्तु' कहते हैं।''

सूबेदार : ''हमको क्या कमी है ! जूनागढ़ जाकर सब भेज देंगे। अभी तो ये नकद दस हजार सोने की मोहरें रख लो।'' और फिर सूबेदार चल पड़ा जूनागढ़।

जिस जगह सूबेदार के साथ भिड़ंत हुई थी वहाँ सोनबा अपने कुटुम्बी लोगों को लेकर गयी और बोली : ''हमें यहाँ बावड़ी खुदवानी है। मनुष्यों और गाय-भैंसों के लिए पानी की किल्लत है।'' बावड़ी का काम शुरू हुआ।

कुछ दिन बीते। एक राजपूत चिट्ठी लेकर सूबेदार के पास पहुँचा। चिट्ठी में लिखा था कि 'कुँवरी साहेबा तीर्थयात्रा को जा रही हैं। तीर्थयात्रा में सखियाँ, सहेलियाँ भी जायेंगी, २० हजार सोना-मोहरें दे दो।'

''अरे, २० क्या २५ हजार ले जाओ। ऐसी वीरांगना मिलेगी मुझे !''

२५ हजार सोना-मोहरें दे दीं मूर्ख ने।

सोनबा ने पहले की १० हजार और अब की २५ हजार सोने की मोहरें सूबेदार की मौत के लिए बावड़ी खुदवाने में लगा दीं, जिसमें नीचे तलघर बनवाया। उसकी बनावट ऐसी थी कि ऊपर से तो पानी की बावड़ी दिखे लेकिन नीचे पूरा गाँव आ जाय ताकि सेंदरड़ा गाँव के लोग गुप्त रूप से रह सकें और कभी शत्रु आये तो उसे पता भी नहीं चले कि कहाँ से कौन निकलकर आया। सोनबा ने बड़ी चतुराई से ऐसी बावड़ी खुदवायी क्योंकि उसके पास गुरुमंत्र था, ध्यान था। सुबह उठती तो ललाट पर भ्रूमध्य में ध्यान करती। रात को सोती तो गुरु के साथ तादात्म्य करके श्वासोच्छ्वास में गुरुमंत्र का जप करती तो उसको अंतरात्मा की ऐसी प्रेरणा मिलती रही कि बड़े-बड़े साजिशकर्ता भी ठोकर खा गये।

जब वर्ष पूरा होने को आया तब सूबेदार ने कहलवाया कि अब शादी के लिए तैयारी करो। मोकल सिंह ने कुछ टेढ़ी-मेढ़ी बात सुना दी कि 'सोनबा से शादी करना माना कब्र में जाना है।'

''हं... मेरे लिए छोटे-से गाँव का मुखिया ऐसा बोल जाय !...'' सूबेदार ने सेना तैयार की और सेंदरड़ा गाँव के नजदीक आकर पड़ाव डाला। ''एक बार संधि कर चुके हो, क्या फिर से मौत के घाट उतरना चाहते हो ? हा... हा... हा...''

धैर्य तो है इसके पास लेकिन तामसी धैर्य है। रात को शराब पी, मांस खाया और सोचने लगा कि 'सुबह इन पर अपन सफल हो जायेंगे...।' राजसी धृति है। 'और चाहिए, और चाहिए...' - लगे रहते हैं लोभी लोग। ये दोनों धृतियाँ व्यक्ति को डुबाती हैं।

श्रीकृष्ण कहते हैं सात्त्विक धृति चाहिए। ईश्वर के रास्ते दृढ़ता से चलो। चाहे कितने विघ्न आयें लेकिन अपने कर्तव्य को, अपने धर्म को, जप-अनुष्ठान को मत छोड़ो, अपने गुरु के ज्ञान को न छोड़ो। यह सात्त्विक धृति है।

सोनबा में सात्त्विक धृति थी और उस सूबेदार में तामसी और राजसी धृति थी कि 'अभी तो धैर्य रखें, सुबह होते ही इनका कचूमर बना देंगे और

सुंदरी को बलपूर्वक ले चलेंगे।'

सूबेदार ने हुक्म दिया : ''चारों तरफ ऐसा कड़ा पहरा लगाओ कि आदमी तो क्या एक चिड़िया भी बाहर न निकल सके।''

मध्यरात्रि को जवानों का एक टोला आया चमचमाती तलवारों के साथ और सूबेदार के कई सैनिकों की मुंडियाँ धड़ से अलग करके गायब हो गया। यवन सैनिकों ने खोजा तो कोई मिले नहीं !

''चारों तरफ मेरी सेना... इतना कड़ा पहरा... देखते ही गोली मारो का आदेश... फिर भी इतने सारे जवान कहाँ से आये और गये कहाँ !!''

उनको पता ही नहीं कि जहाँ ठहरा है वहीं तलघर से आये और तलघर में चले गये। नशेबाजों को क्या पता चले !

सुबह हुई। सूबेदार ने चढ़ाई कर दी। सेंदरड़ा गाँव को घेर लिया। हाथी की टक्कर से दरवाजा टूटा। घुसे अंदर, तो क्या देखते हैं कि लोग हैं ही नहीं !

''सेंदरड़ा के लोग कहाँ गये ? दरवाजे बंद करके छुप गये क्या ? दरवाजे तोड़ो !''

घर-घर के दरवाजे तोड़े तो सारे घर खाली ! पूरा सेंदरड़ा खाली !! सूबेदार : ''लगता है डर के मारे भाग गये। मुखिया के घर में जाओ। उस सुंदरी को तो ले चलेंगे।''

न सुंदरी मिली, न सुंदरा मिला... धक्के खाते-खाते निराश होकर अपने पड़ाव पर आये।

छावनी में आकर देखा तो दुश्मन अचानक हल्ला करके भाग गया है। कई सैनिक मारे गये हैं, कई घायल अवस्था में पड़े हैं। सोचने लगे, 'क्या कारण है ? बंदूकें हमारे पास, उनके पास कोई बंदूक नहीं फिर भी हम मौत के घाट उतार दिये जा रहे हैं। हम उपाय खोजेंगे धीरज से।'

उपाय तो खोज रहे हैं लेकिन तामसी बुद्धि से। प्याली पी, सोये... नींद तो क्या आनी थी, मौत आनी थी। सोनबा और सैनिक तलघर से निकले और धाड़-धाड़-धाड़ हमला कर दिया। वे तो शराबी थे। वे बंदूकें सँभालें उसके पहले सोनबा ने उनको सँभला दिया... किसीको भाला तो किसीको तलवार की नोंक। एक अकेली सोनबा और मुट्ठीभर सैनिक !

सोनबा सूबेदार के तम्बू में घुस आयी और गरज पड़ी : ''तुझे सोनबा चाहिए थी न ? मैं आ गयी हूँ मूर्ख !'' और भाला सीधा उसकी छाती में घुसेड़ दिया। किसकी ? जो सोनबा को अपनी बेगम बनाना चाहता था। बाकी के सैनिक जान बचाकर भाग गये।

भावनगर जिले के सोनगढ़ के पास सेंदरड़ा गाँव के नजदीक सोनबा ने जो बावड़ी खुदवायी थी, वहाँ बसा गाँव आज भी उस संयमी, सदाचारिणी, वीर कन्या की यशोगाथा की खबर दे रहा है। उस कन्या के सत्संग, साहस, धैर्य, गुरुभक्ति और संयमी जीवन की खबर दे रहा है। वह आजीवन ब्रह्मचारिणी रही। जैसे मीरा ने परमेश्वर को वर बनाया, ऐसे ही उस कन्या ने परब्रह्म परमात्मा को ही वर बनाया।

एक कन्या में कितनी शक्ति छुपी है ! इतना बड़ा सूबेदार, इतने सारे सैनिक, इतनी सारी बंदूकें... ये बेचारे छोटी-मोटी लट्ठियों और तलवारों से उनका क्या मुकाबला करें ! सोनबा ने युक्ति खोजी और गुरुकृपा से उसे सूझ गयी। दुष्ट को कैसे धैर्यपूर्वक यमपुरी पहुँचाया जाता है और अपने आत्मा को परमात्मा में कैसे पहुँचाया जाता है, इसकी सीख सोनबा ने सद्गुरु से पा ली थी। सोनबा अपने को शरीर नहीं मानती थी। शरीर पंचभौतिक है, इसको स्वस्थ रखो, संयमी रखो लेकिन भीतर से जानो कि 'शरीर की बीमारी मेरी बीमारी नहीं है। मन का दुःख मेरा दुःख नहीं है। चित्त की चिंता मेरी चिंता नहीं है। संसार सपना है, उसको चलानेवाला चैतन्य परमात्मा अपना है। ॐ... ॐ... ॐ...'

इस कथा से भगवान की यह बात स्पष्ट समझ में आ सकती है कि तामसी और राजसी धैर्यवाला तुच्छ चीजों के लिए धैर्य धारण (शेष पृष्ठ २४ पर)

ब्रह्मचर्य का अर्थ

- पूज्य बापूजी

(गतांक से आगे)

ब्रह्मचर्य का अर्थ है सभी इन्द्रियों पर काबू पाना। ब्रह्मचर्य में दो बातें होती हैं : (१) ध्येय उत्तम होना (२) इन्द्रियों और मन पर अपना नियंत्रण होना।

ब्रह्मचर्य में मूल बात यह है कि मन और इन्द्रियों को उचित दिशा में ले जाना है। ब्रह्मचर्य बड़ा गुण है। वह ऐसा गुण है, जिससे मनुष्य को नित्य मदद मिलती है और जीवन के सब प्रकार के खतरों में सहायता मिलती है।

ब्रह्मचर्य आध्यात्मिक जीवन का आधार है। आज जो आध्यात्मिक जीवन गिर गया है, उसकी स्थापना करनी है। उसमें ब्रह्मचर्य एक बहुत सहायक साधन है और बड़ा कल्याणकारी है। अगर ठीक ढंग से सोचें तो गृहस्थाश्रम भी ब्रह्मचर्य के लिए ही है। शास्त्रकारों के बताये अनुसार ही अगर वर्तन किया जाय तो गृहस्थाश्रम भी ब्रह्मचर्य की साधना का एक प्रकार हो जाता है।

पृथ्वी पर पाप का भार होता है, संख्या का नहीं। संतान पाप से बढ़ सकती है, पुण्य से भी बढ़ सकती है। संतान पाप से घट सकती है, पुण्य से भी घट सकती है। पुण्यमार्ग से संतान बढ़ेगी या घटेगी तो नुकसान नहीं होगा। पापमार्ग से संतान बढ़ेगी तो पृथ्वी पर भार होगा और पापमार्ग से संतान घटेगी तो भी नुकसान होगा। संतान-निरोध के कृत्रिम उपायों के अवलम्बन से सिर्फ संतान ही नहीं रुकेगी, बुद्धिमत्ता भी रुकेगी। यह जो सर्जनशक्ति (Creative Energy) है, जिसे हम 'वीर्य' कहते हैं, मनुष्य उस निर्माणशक्ति का दुरुपयोग करता है। उस शक्ति का दूसरी तरफ जो उपयोग हो सकता था, उसे विषय-उपभोग में लगा दिया। विषय-वासना पर जो अंकुश रहता था, वह नहीं रहा। संतान उत्पन्न न हो, ऐसी व्यवस्था करके पति-पत्नी विषय-वासना में व्यस्त रहेंगे तो उनके दिमाग का कोई संतुलन नहीं रहेगा। ऐसी हालत में देश तेजोहीन बनेगा। ज्ञानतंतु भी क्षीण होंगे, प्रभा भी कम होगी, तेजस्विता भी कम होगी। शारीरिक (एड्स और अन्य यौन संक्रमित रोग से ग्रस्त) और मानसिक रोगी बढ़ेंगे, अपराध बढ़ेंगे, सामाजिक समस्याएँ बढ़ेंगी और चरित्रहीनता बढ़ेगी।

आज मानव-समाज में 'सेक्स' का ऊधम मचाया जा रहा है। मुझे इससे युद्ध से भी ज्यादा भय मालूम होता है। अहिंसा को हिंसा का जितना भय है, उससे ज्यादा काम-वासना का है। कमजोरों की जो संतानें पैदा होती हैं, वे भी निर्वीर्य या निकम्मी होती हैं। जानवरों में भी यह देखा गया है। **शेर के बच्चे कम होते हैं, बकरी के ज्यादा।** मजबूत जानवरों में विषय-वासना कम होती है, कमजोरों में ज्यादा। इसीलिए ऐसा वातावरण निर्मित किया जाय जो संयम के अनुकूल हो। समाज में पुरुषार्थ बढ़ायें, साहित्य सुधारें और गंदा साहित्य, गंदे सिनेमा रोकें। (क्रमशः) ❑

(पृष्ठ २३ से 'पापी का जूता...' का शेष)

करता है। ऐसे तो बगुला भी मछली के शिकार के लिए धैर्यवान दिखता है अथवा तो कोई प्रेमी, प्रेमिका को फँसाने के लिए धैर्यपूर्वक लगा रहता है, प्रेमिका प्रेमी को उल्लू बनाने के लिए लगी रहती है लेकिन ये सारे धैर्य तुच्छ हैं। जो अपने आत्मा-परमात्मा के स्वभाव को पाने के लिए धैर्यवान होकर लग जाता है, उसका धैर्य सात्त्विक है। वह सात्त्विक धैर्यवान व्यक्ति अपने जीवनदाता के सुख, शांति, माधुर्य और सामर्थ्य को पा लेता है। ❑

सद्गुरु से क्या सीखें ?

- पूज्य बापूजी

(अंक २४३ से आगे)

गुरूजी से चौदहवीं बात यह जान लो कि स्त्री, पुत्र, गृह एवं सम्पत्ति भगवान को कैसे अर्पण करें ?

इनमें ममता रहेगी तो कितनी भी होशियारी छाँटे लेकिन जहाँ ममता है, मर के वहीं भटकेगा । तो इन्हें भगवान का कैसे मानें ?

वास्तव में पाँच भूतों की गहराई में भगवत्सत्ता है । सभी चीजें भगवत्सत्ता से बनी हैं, भगवत्सत्ता में ही रह रही हैं और भगवत्सत्ता में ही खेल रही हैं । इनमें केवल ममता ही है कि 'यह मेरा बेटा है, मेरा घर है, मेरी स्त्री है ।' वास्तव में हमारा शरीर भी हमारा नहीं है, हमारे कहने में नहीं चलता । हम चाहते हैं यह सदा जिये पर नहीं जियेगा । हम चाहते हैं बाल सफेद न हों पर हो जाते हैं, बूढ़ा न होना पड़े पर हो जाते हैं । जब शरीर ही मेरा नहीं तो 'यह मेरी स्त्री, यह मेरा पति, यह मेरी सम्पत्ति...' - यह कितना सत्य है ? सब भ्रममात्र है । वास्तव में 'भगवान मेरे हैं, मैं भगवान का हूँ ।' ऐसी प्रीति और समझ दोहराने से ममता की जंजीरें कटती जायेंगी, ममता का जाल कटता जायेगा । संत तुलसीदासजी ने सुंदर उपाय बताया है :

तुलसी ममता राम सों, समता सब संसार ।
राग न रोष न दोष दुख, दास भये भवपार ॥

वह जन्म-मरण के चक्कर से, दुःखों से पार हो जाता है ।

पन्द्रहवाँ प्रश्न है कि संतों में प्रेम होने से इतना फायदा होता है तो संतों में, संत-वचनों में प्रीति कैसे हो ?

बोले : 'संतों में प्रीति का एक ही उपाय है - उन्हींकी कृपा हो, ईश्वर की कृपा हो ।'

भगति तात अनुपम सुखमूला ।
मिलइ जो संत होइँ अनुकूला ॥
(श्री रामचरित. अर.कां. : १५.२)

जब संत अनुकूल हों तब भक्ति मिलती है । संत अनुकूल कब होंगे ? संतों के सिद्धांतों के अनुरूप अपने को ढालने की केवल इच्छा करने से । यदि ढाल नहीं सकते तो कोई बात नहीं, केवल इच्छा ही करो बस । बच्चा पढ़ा-लिखा थोड़े ही बाल मंदिर में आता है, केवल पढ़ने की इच्छामात्र से आता है तो आगे स्नातक हो जाता है । ऐसे ही उस इच्छामात्र से आये तो भी उसका काम बन जायेगा ।

सोलहवाँ प्रश्न यह पूछो कि हम सेवा में सफल कैसे हों ?

सेवा के लिए ही सेवा करें । मन में कुछ ख्वाहिश रखकर बाहर से सेवा का स्वाँग करेंगे तो यह समाज के साथ धोखा है । जो समाज को धोखा देता है वह खुद को भी धोखा देता है । सेवा का लिबास पहनकर, सेवा का बोर्ड लगाकर अपना उल्लू सीधा करना यह काम उल्लू लोग जानते हैं । सच्चा सेवक तो सेवा को इतना महत्त्व देगा कि सेवा के रस से ही वह तृप्त रहेगा ।

बोले : 'भगवान की कृपा से ही ईमानदारी की सेवा होती है ।' नहीं तो सेवा के नाम पर लोग बोलते हैं कि 'हमारी बस सर्विस पिछले चालीस वर्षों से सतत प्रजा की सेवा में है । हमारी कम्पनी पिछले इतने सालों से सेवा कर रही है ।' अब

सेवा की है कि सेवा के नाम पर अपने बँगले बनाये हैं, मर्सडीज लाये हैं ! अपने पुत्र-परिवार में ममता बढ़ायी फिर जन-कल्याण की संस्था खुलवायी। अपनी वासनापूर्ति का नाम सेवा नहीं है। वासना-निवृत्ति हो जिस कर्म से, उसका नाम है सेवा ! अहंकार पोसने का नाम सेवा नहीं है। मनचाहा काम तो कुत्ता भी कर लेता है। आपने देखा होगा कि जब सड़क पर गाड़ी दौड़ाते हैं तो कई बार कुत्ते आपकी गाड़ी के पीछे भौंकते हुए थोड़ी दूर तक दौड़ लगा लेते हैं। यह मनचाहा काम तो कुत्ते भी खोज लेते हैं। आप मनचाहा करोगे तो आपका मन आप पर हावी हो जायेगा। यदि किसी कार्य में आपकी रुचि नहीं है, कोई कार्य आपको अच्छा नहीं लगता है लेकिन शास्त्र और सद्गुरु कहते हैं कि वह करना है तो बस, बात पूरी हो गयी ! वह कार्य कर ही डालना चाहिए।

ये सोलह बातें अगर जान लीं और इन पर डट गये तो बस, हो गया काम ! (समाप्त) ❑

सुख-सम्पदा और श्रेय की प्राप्ति

(वैशाखी पूर्णिमा : २५ मई)

वैशाखी पूर्णिमा को 'धर्मराज व्रत' कहा गया है। यह पूर्णिमा दान-धर्मादि के अनेक कार्य करने के लिए बड़ी ही पवित्र तिथि है। इस दिन गरीबों में अन्न, वस्त्र, टोपियाँ, जूते-चप्पल, छाते, छाछ या शरबत, सत्संग के सत्साहित्य आदि का वितरण करना चाहिए। अपने स्नेहियों, मित्रों को सत्साहित्य, सत्संग की वीसीडी, डीवीडी, मेमोरी कार्ड आदि भेंट में दे सकते हैं।

इस दिन यदि तिलमिश्रित जल से स्नान कर घी, शर्करा और तिल से भरा हुआ पात्र भगवान विष्णु को निवेदन करें और उन्हींसे अग्नि में आहुति दें अथवा तिल और शहद का दान करें, तिल के तेल के दीपक जलायें, जल और तिल से तर्पण करें अथवा गंगादि में स्नान करें तो सब पापों से निवृत्त हो जाते हैं। यदि इस दिन एक समय भोजन करके पूनम-व्रत करें तो सब प्रकार की सुख-सम्पदाएँ और श्रेय की प्राप्ति होती है।

वैशाख मास के अंतिम ३ दिन दिलायें महापुण्य पुंज

'स्कंद पुराण' के अनुसार वैशाख मास के शुक्ल पक्ष में अंतिम ३ दिन, त्रयोदशी से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियाँ बड़ी ही पवित्र और शुभकारक हैं। इनका नाम 'पुष्करिणी' है, ये सब पापों का क्षय करनेवाली हैं। **जो सम्पूर्ण वैशाख मास में ब्राह्ममुहूर्त में पुण्यस्नान, व्रत, नियम आदि करने में असमर्थ हो, वह यदि इन ३ तिथियों में भी उसे करे तो वैशाख मास का पूरा फल पा लेता है।**

वैशाख मास में लौकिक कामनाओं का नियमन करने पर मनुष्य निश्चय ही भगवान विष्णु का सायुज्य प्राप्त कर लेता है। जो वैशाख मास में अंतिम ३ दिन 'गीता' का पाठ करता है, उसे प्रतिदिन अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। जो इन तीनों दिन 'श्रीविष्णुसहस्रनाम' का पाठ करता है, उसके पुण्यफल का वर्णन करने में तो इस भूलोक व स्वर्गलोक में कौन समर्थ है ! अर्थात् वह महापुण्यवान हो जाता है। जो वैशाख के अंतिम ३ दिनों में 'भागवत' शास्त्र का श्रवण करता है, वह जल में कमल के पत्तों की भाँति कभी पापों में लिप्त नहीं होता। इन अंतिम ३ दिनों में शास्त्र-पठन व पुण्यकर्मों से कितने ही मनुष्यों ने देवत्व प्राप्त कर लिया और कितने ही सिद्ध हो गये। अतः वैशाख के अंतिम दिनों में स्नान, दान, पूजन अवश्य करना चाहिए। ❑

...तो आपके लिए सब सहज हो जायेगा

- पूज्य बापूजी

श्री रामकृष्ण परमहंस से एक शिष्य (मथुर बाबू) ने पूछा : ''अगर चैतन्य में हमारी स्थिति हो जाय तो क्या हमारे लिए प्रकृति के नियम बदल सकते हैं ?''

बोले : ''क्यों नहीं ! हाँ, बदल सकते हैं, जो भी चाहे।''

शिष्य : ''तो फिर क्या इस लाल गुड़हल के पौधे में, लाल फूल की जगह पर सफेद फूल भी लाया जा सकता है ?''

रामकृष्ण मुस्कराये।

एक दिन रामकृष्णजी ने देखा कि लाल गुड़हल के पौधे पर लाल फूल के साथ एक सफेद फूल लगा हुआ है। उन्होंने पूरी डाली तोड़ ली और ले जाकर शिष्य मथुर बाबू को दिखायी।

शिष्य ने आश्चर्यचकित होकर पूछा : ''गुरुजी ! यह क्या है ?''

गुरुजी मंद-मंद मुस्कराये और बोले : ''ये चमत्कार दिखाने के लिए नहीं होते लेकिन चैतन्य की सत्ता समझाने के लिए कभी-कभी साधकों के सामने हो जाते हैं।''

कैसा है ज्ञानियों की इच्छाशक्ति का प्रभाव ! जिनके आगे प्रकृति भी अपने नियम बदल देती है।

एक बार एक डॉक्टर मेरे (पूज्य बापूजी के) पीछे लगा। उसकी अपनी दवाई बनाने की मशीनरी थी। बोले : ''गुरुजी एक बार चेक कर लें, हड्डियों का कैल्शियम जाँचने की मशीन लाया हूँ।''

मैंने उसकी प्रार्थना मान के रख दिया पैर उसकी मशीन पर। वह मेरे सामने देखता रह गया। बोला : ''इतना प्रचुर कैल्शियम ! २५ साल के जवान का जो कैल्शियम होना चाहिए वही है।''

मैंने कहा : ''अब क्या चेक करना है ?''

वह और भी साधन लाया था।

''बी.पी. चेक करना है ?''

बोला : ''हाँ।''

''कैसा बी.पी. चाहिए ?''

बोले : ''नॉरमल।''

''लो नॉरमल। अब कैसा चाहिए ? हाई चाहिए ?''

''ओह ! २४० ! इतना हाई !''

''अब देख, लो बी.पी.।''

तो देखा लो बी.पी. - ९० ! उसने कहा : ''आप भगवान हैं।''

अरे ! सभी भगवान हैं। नहीं जानते तो छिपे हुए भगवान हैं, जानते हैं तो जागृत भगवान हैं और क्या ?

आप एक बार उस परब्रह्म परमात्मा में स्थित हो जाओ तो आपके लिए सब सहज हो जायेगा। मुझे जो गाय दूध पिलाती थी वह गर्भवती हो गयी थी। अब दूध कहाँ से लाना ? तो मैंने प्यार से गाय की गर्दन को सहलाया, वह फोटो भी है। मैंने कहा : ''अब दूध पिलाना बंद कर दिया क्या ?'' फिर उस गाय ने जीवन में दूध कभी बंद नहीं किया, जब तक वह जी। ऐसे ही आम का वृक्ष बारहों महीने फल देता है मेरे को। आँवले का वृक्ष बारहों महीने फल देता है और भगवान तो बारहों महीने, चौबीसों घंटे, हर सेकंड फलित-ही-फलित कर रहे हैं ! ❑

गुणों के चक्र से परे हैं आप !

पराशरजी अपने जिज्ञासु शिष्य मैत्रेय को संसार-चक्र से निकलने की सरल युक्ति बताते हुए कहते हैं : ''हे शिष्य ! जैसे आकाश में सप्त ऋषियों से लेकर सूर्य, चन्द्र आदि नक्षत्र तथा तारामंडल का चक्र दिन-रात घूमता रहता है परंतु ध्रुव तारा अचल, एकरस रहता है । यदि अन्य तारों की तरह ध्रुव भी चलायमान होता तो उसका नाम ध्रुव नहीं, अध्रुव होता । उसी प्रकार माया व अज्ञानरूप आकाश में नक्षत्र व तारों के समान देह आदि पदार्थों का चक्र निरंतर घूमता रहता है परंतु आत्मा एकरस, अचल है ।

जैसे अनेक बार जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति अवस्थाएँ होती हैं और मिट जाती हैं, वैसे ही बाल-युवा-वृद्ध अवस्थाएँ अनेक शरीरों में अनेक बार प्राप्त हुई तथा मिट गयीं । उसी प्रकार भविष्यकाल वर्तमानकाल हो जाता है, वही वर्तमानकाल भूतकाल हो जाता है और पुनः-पुनः भूत, भविष्य और वर्तमान होता रहता है । दिन-रात, ग्रहण-त्याग का चक्र निरंतर चलता ही रहता है ।

ऐसे ही सत्त्व आदि गुणों का अदल-बदल होता रहता है अर्थात् कभी दैवी गुण तो कभी आसुरी गुणों का चक्र निरंतर चलता रहता है । ऐसे ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, शांति आदि का चक्र भी घूमता रहता है । सब अदल-बदल होता रहता है परंतु ये सभी चक्र मिथ्या हैं और जिससे ये सभी चक्र घूमते तथा अदल-बदल होते सिद्ध होते हैं, वह चैतन्य निर्विकार, निर्विकल्प, अचल, असंग आत्मा तुम्हारा स्वरूप है । यदि आत्मा भी इन्हीं चक्रों की नाईं चलायमान होता तो अनित्य हो जाता लेकिन वह तो नित्य, अचल है । वह तुम हो ।''

(आध्यात्मिक विष्णु पुराण से)

आध्यात्मिक विष्णु पुराण कहता है : 'वह तुम हो जहाँ से 'मैं-मैं' स्फुरित होता है । वही तुम्हारा 'मैं' जीव भी बन जाता है, वही तुम्हारा 'मैं' ईश्वर भी बन जाता है । सबसे प्यारा, सबका प्यारा अपना आत्मा है । दूर नहीं, दुर्लभ नहीं, परे नहीं, पराया नहीं । ॐ... ॐ... ॐ...

सबके रूपों में वही है अनंत ! अनेक दिखते हुए भी अद्वितीय । अनंत दो नहीं होते । अनंत दो या एक होगा तो अनंत कैसे रहेगा ? सारे दुःखों व मुसीबतों का मूल है सच्चे अनंत अपने-आपको भूलना और मिथ्या द्वैत को सच्चा मानना ।'

चांदणा कुल जहान का तू,
तेरे आसरे होय व्यवहार सारा ।
तू सब दी आँख में चमकदा है,
हाय चांदणा तुझे सूझता अँधियारा ॥
जागना सोना नित ख्वाब तीनों,
होवे तेरे आगे कई बारा ।
बुल्लाशाह प्रकाश स्वरूप है,
इक तेरा घट वध न होवे यारा ॥

प्रकाशस्वरूप तेरा अनंत एकरस आत्मा है । खोज ले ब्रह्मज्ञानियों की शरण, जो जगा दें परब्रह्म स्वभाव में ! श्रीकृष्ण कहते हैं :

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ । उनको भलीभाँति दंडवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे ।' **(गीता : ४.३४)** ❑

नमक : उपकारक भी और अपकारक भी

(गतांक से आगे)

नमक कौन-सा खायें ?

आयुर्वेद के अनुसार सेंधा नमक सर्वश्रेष्ठ है। लाखों वर्ष पुराना समुद्री नमक जो पृथ्वी की गहराई में दबकर पत्थर बन जाता है, वही सेंधा नमक है। यह रुचिकर, स्वास्थ्यप्रद व आँखों के लिए हितकर है।

सेंधा नमक के लाभ

आधुनिक आयोडीनयुक्त नमक से सेंधा नमक श्रेष्ठ है। यह कोशिकाओं के द्वारा सरलता से अवशोषित किया जाता है। शरीर में जो ८४ प्राकृतिक खनिज तत्त्व होते हैं, वे सब इसमें पाये जाते हैं।

(१) शरीर में जल-स्तर का नियमन करता है, जिससे शरीर की क्रियाओं में मदद मिलती है।

(२) रक्त में शर्करा के प्रमाण को स्वास्थ्य के अनुरूप रखता है।

(३) पाचन संस्थान में पचे हुए तत्त्वों के अवशोषण में मदद करता है।

(४) श्वसन तंत्र के कार्यों में मदद करता है और उसे स्वस्थ रखता है।

(५) साइनस की पीड़ा को कम करता है।

(६) मांसपेशियों की ऐंठन को कम करता है।

(७) अस्थियों को मजबूत करता है।

(८) स्वास्थ्यप्रद प्राकृतिक नींद लेने में मदद करता है।

(९) पानी के साथ यह रक्तचाप के नियमन के लिए आवश्यक है।

(१०) मूत्रपिंड व पित्ताशय की पथरी रोकने में रासायनिक नमक की अपेक्षा अधिक उपयोगी।

समुद्री नमक के लाभ

यह समुद्र से प्राकृतिक रूप में प्राप्त होता है, इसलिए इसमें शरीर के स्वास्थ्य के लिए जरूरी ८० से अधिक खनिज तत्त्व मौजूद रहते हैं। यह बाजारू आयोडीनयुक्त नमक से बहुत सस्ता व अधिक लाभदायक है।

(१) रोगप्रतिकारक शक्ति को बढ़ाता है, जिससे सर्दी, फ्लू, एलर्जी आदि रोगों से रक्षा होती है।

(२) कई जानलेवा बीमारियों से बचाता है।

(३) समुद्री नमक आपका वजन कम करने में भी सहयोग देता है। यह पाचक रसों के निर्माण में मदद करता है, जिससे आहार का पाचन शीघ्र होता है। यह कब्ज को दूर करता है।

(४) यह दमा के रोगियों को लाभप्रद है।

(५) यह नमक मांसपेशियों की ऐंठन और दर्द को रोकने में मददरूप होता है।

(६) पानी के साथ समुद्री नमक लेने से कोलेस्ट्रॉल का प्रमाण कम होता है और उच्च रक्तचाप को यह कम करता है तथा अनियमित दिल की धड़कनों को नियमित करता है। इस प्रकार यह atherosclerosis, दिल के दौरे और हृदयाघात को रोकने में मदद करता है। यह शरीर में शर्करा का प्रमाण बनाये रखने में मदद करता है, जिससे इंसुलिन की आवश्यकता को कम करता है। अतः मधुमेह के रोगियों के आहार में यह अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

मानसिक अवसाद : तनाव का सामना करने के लिए आवश्यक हार्मोन्स सेरोटोनिन और मेलाटोनिन को शरीर में बनाये रखने में मदद करता है। इससे हम अवसाद एवं तनाव से मुक्त रहते हैं और अच्छी नींद आती है। ❑

आधे घंटे में मुसीबतों से मुक्ति

- पूज्य बापूजी

'अथर्ववेद' (८.१४) में आता है :

उत्क्रामातः पुरुष माव पत्था ।

अपनी वर्तमान अवस्था में ही ऊपर उठो। भूतकाल को भूल जाओ। 'मैंने यह दुःख देखा, मेरा वह मर गया...'- इस चिंता और चिंतन में अपने को कोसो नहीं। भविष्य के शेखचिल्ली के किले में उलझो मत। वर्तमान में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाओ। कैसी भी परिस्थिति आये, वह आने-जानेवाली है लेकिन उसको जाननेवाला मेरा परमात्मा नित्य है। उसका चिंतन करो, जप करो, ध्यान करो।

आधा घंटा परमात्म-ध्यान करने से जो बल, दिव्यता प्राप्त होती है, जो परिस्थितियों से जूझने की शक्ति और सामर्थ्य आता है, वहाँ और साधनों की पहुँच नहीं है। कुछ भी न हो लेकिन केवल आधा घंटा परमात्मा के ध्यान में डूबने की कला सीख लो तो जो शांति, आत्मिक बल और आत्मिक धैर्य आयेगा, उससे एक सप्ताह तक संसारी समस्याओं से जूझने की ताकत आ जायेगी।

और ध्यान क्या करना है ? भगवान या गुरु की मूर्ति अथवा आकाश को एकटक देखते रहो आधा घंटा और ॐकार का लम्बा उच्चारण करके शांत होते जाओ। इससे तुमको एक सप्ताह तक ऐसी धृति प्राप्त होगी कि व्यावहारिक विघ्न-बाधाओं और प्रलोभनों से आप प्रभावित न रहकर अपने उद्देश्य में टिके रहोगे।

लोग स्नातक होने के बाद भी प्रमाण-पत्र लेकर ५-१० हजार की नौकरी के लिए चक्कर काटते रहते हैं और नौकरी मिलती है तो फिर बदली सहते रहते हैं। प्रतिदिन अगर आधा घंटा परमात्म-ध्यान करने में लगायें तो सारी मुसीबतों की जड़ें कट जायेंगी। अथवा तो गुरुमंत्र लेकर उसका थोड़ा जप-अनुष्ठान करो तो आपकी भाग्य की रेखाएँ बदल जायेंगी। जन्मकुंडली के १२ स्थानों में से जो दूसरा स्थान है वह रूपांतरित हो जाता है। आपकी छाया जैसे आपके पीछे आती है, ऐसे ही रोजी-रोटी, रुपये-पैसे की आपको तंगी नहीं रहेगी, ये स्वयं आप तक पहुँच जायेंगे। मंत्रजप में वह शक्ति है ! ❑

ग्रीष्म के कुछ विशेष प्रयोग

(१) भुने हुए जौ के सत्तू को शीतल जल में घी व मिश्री के साथ मिलाकर पीने से शारीरिक दुर्बलता, रुक्षता व जलीय अंश की कमी पूरी होती है।

(२) गुड़ को एक घंटा पानी में भिगोकर पीने से गर्मी के प्रतिकार की क्षमता बढ़ती है।

(३) कच्चे आम का पना, नींबू-मिश्री शरबत, हरे नारियल का पानी, ताजे फल, ठंडाई, जीरे की शिकंजी, गुलकंद, दूध-चावल की खीर आदि का सेवन सूर्य की अत्यंत उष्ण किरणों से शरीर की रक्षा करता है।

(४) **हरड़ चूर्ण व गुड़ समभाग मिलाकर लेने से वात व पित्त का प्रकोप नहीं होता।**

(५) रात का रखा हुआ पानी सूर्योदय से पूर्व पीने से लू लगने की सम्भावना कम हो जाती है, बाकी अपनी सावधानी रखना जरूरी है।

(६) अम्लपित्त के कारण होनेवाले दाह और प्यास के शमन हेतु आँवला चूर्ण व मिश्री पानी में मिलाकर पीने से लाभ होता है।

भक्तों के अनुभव

किस माँ का दूध पिया है...

मैं क्लीनिक पर मरीज देख रहा था । शाम ७ बजे चार व्यक्ति आये, बोले : ''हमें दाँत में तकलीफ है ।'' देखा तो कोई तकलीफ थी नहीं ! इतने में पीछे से एक ने मेरी कनपटी पर रिवॉल्वर रख दी, दूसरे ने गर्दन पर चाकू लगा दिया और बोला : ''अंदर चल नहीं तो गोली मार दूँगा !''

उसने रिवॉल्वर के पिछले हिस्से से कनपटी पर जोर से मारा । एक्स-रे मशीन के ऊपर लगे बापूजी के फोटो को देखकर मैंने कहा : ''बापूजी ! आपके होते हुए मेरे साथ यह क्या हो रहा है ?'' ऐसा कहते ही मुझमें अथाह शक्ति आ गयी । मैं गरजकर बोला : ''किस माँ का दूध पिया है तूने ? आ, बताता हूँ तेरे को ।'' मैंने उसका कॉलर पकड़ा, चाकूवाले को पीछे से पकड़ के सामने लाया और कहा : ''आ, अभी तेरे टुकड़े-टुकड़े कर देता हूँ । मेरा निवास ऊपर है । तेरे टुकड़े ऊपर करूँ या नीचे करूँ बोल ?'' यह मेरे पूज्य बापूजी की कृपा का सामर्थ्य बोल रहा था । मेरा प्राणबल देख के वे डर गये । एक हाथ से मैंने रिवॉल्वरवाले को पकड़ा और दूसरे हाथ से चाकूवाले को तथा दोनों के बीच में तीसरे को कस के दबा दिया और सड़क पर ले जाने का प्रयास कर रहा था कि इतने में चौथे ने मेरे पैर में पैर फँसा दिया, जिससे मैं गिर पड़ा और वे भाग गये ।

पूज्य गुरुदेव साक्षात् द्वारिकाधीश भगवान हैं, इसमें कोई दो राय नहीं है । अगर बापूजी ने उस समय आत्मबल जगाकर सूझबूझ न दी होती तो मैं कब का ऊपर पहुँच गया होता ।

– डॉ. राकेश शर्मा, भवानीमंडी (राज.)
मो. : ९८८७२३२६९६

सबको निर्भय योग सिखायें...

महापुरुष स्वयं तो निर्भयता की जीती-जागती मूर्ति होते ही हैं उनके सम्पर्क में आनेवाले भी इन दैवी गुणों से भर जाते हैं ।

घटना ३ नवम्बर २०११ की है । एक सज्जन (श्री चन्द्रप्रकाश मिश्रा) सत्संग सुनकर अहमदाबाद से कानपुर जा रहे थे । उज्जैन के पहले ट्रेन में अचानक चार लुटेरे घुस गये । वे छुरा दिखाकर लोगों को लूटने लगे । भय के कारण सभी लोग उन्हें अपना कीमती सामान देने लगे । पढ़े-लिखे समझदार कहलानेवालों को इतना कायर देख उन सज्जन के दिल में हुआ कि 'हद हो गयी ! चार लोगों से पूरे डिब्बे के लोग भयभीत हो रहे हैं और लुटे जा रहे हैं ! कोई विरोध भी नहीं कर रहा है !' ४०-४५ लोगों को लूटने के बाद एक डाकू इन ७४ वर्षीय सज्जन के पास आया, बोला : ''ला पैसे निकाल !'' उन्होंने कहा : ''पैसे क्यों दूँ ?''

लुटेरे ने छुरा दिखाते हुए कहा : ''ऐ ! खत्म कर दूँगा, जल्दी पैसे निकाल !'' उन बुजुर्ग सज्जन ने बिजली की-सी फुर्ती से उसका छुरेवाला हाथ पकड़ा और दूसरे हाथ से उसे पीटना शुरू कर दिया । इतने में दूसरे भाई ने भी उसे पकड़कर पीटना शुरू कर दिया । फिर तो पूरे डिब्बे के लोग उन लुटेरों पर टूट पड़े । तीन तो चलती ट्रेन से कूदकर भाग गये, एक को उज्जैन की रेलवे पुलिस को सौंप दिया । एक सत्संगी ने पूरे डिब्बे को निर्भय कर, लुटने से बचा लिया । 'श्री आशारामायण' की ये पंक्तियाँ एकदम सत्य हैं :

सबको निर्भय योग सिखायें,
सबका आत्मोत्थान करायें ।

हे जग-कल्याणकारी बापूजी ! आपको बारम्बार प्रणाम !

– आई. एस. राजपूत
मो. : ८६९०९९३७१६ ❑

नरक से निकाला 'ऋषि प्रसाद' ने

पूज्य बापूजी की शरण में आने से पूर्व मेरा जीवन नारकीय था। मैं पूरी रात शराब पीता और सुबह ५ बजे सोने जाता, ऐसे कुसंग के कीचड़ में लथपथ था।

एक रात एक सेवादार ने मुझे मेरे कार्यालय में 'ऋषि प्रसाद' लाकर दी। मैं शराब पीते-पीते ही उसे पढ़ने लगा। 'ऋषि प्रसाद' पढ़ने से धीरे-धीरे मेरे विचार बदलने लगे। मैं पूज्यश्री का साहित्य पढ़ता, सत्संग देखता। पूज्य बापूजी की मधुर, हितकर अमृतवाणी व उनका अलौकिक तेजस्वी आभामंडल मुझे अपनी ओर दिनोंदिन खींचने लगा।

मैंने पूज्य बापूजी से गुरुमंत्र की दीक्षा ले ली। उस दिन से तो मेरा कायाकल्प ही हो गया। सारी गंदी आदतें छूट गयीं और जीवन ईमानदारी, सच्चरित्रता जैसे सद्गुणों से भर गया। जिस कमरे में शराब पीता था, उसी कमरे को गंगाजल से शुद्ध करके मैंने उसमें ४० दिन का अनुष्ठान किया। मेरा छोटा-सा व्यवसाय अब बापूजी की कृपा से पहले से बहुत अच्छा चल रहा है।

'ऋषि प्रसाद' की सेवा करके बापूजी के करकमलों से प्रसाद पाऊँगा और बापूजी से रू-बरू मिलने का अवसर भी प्राप्त कर लूँगा - यह लालच मन में रखकर 'ऋषि प्रसाद' की सेवा शुरू कर दी। परंतु गुरु-दर्शन की लालसा और इस सेवा ने मुझे परमात्म-शांति की ओर मोड़ दिया। आज मैं केवल आत्मशांति के लिए ही सेवा कर रहा हूँ। जब भी प्रमादवश सेवा से मुँह मोड़ता हूँ तो अंतरात्मा में बापूजी की डाँट मिलती है और अशांति हो जाती है।

समयाभाव के कारण अभी मैं घर-घर जाकर सदस्य नहीं बना पाता हूँ, अतः विद्यालय के विद्यार्थियों को उपहारस्वरूप निःशुल्क सदस्य बनवाकर ही सेवा करता हूँ। मुझे बहुत ही प्रसन्नता है कि सेवा के माध्यम से मेरे धन का सदुपयोग हो रहा है। मैंने वर्ष २०१२ में 'घर-घर अलख जगाओ' अभियान के अंतर्गत कुल ११,०२५ सदस्य बनाकर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

'ऋषि प्रसाद' ने करोड़ों परिवारों तक सुखी, स्वस्थ, सम्मानित व प्रभु-प्रेम से परिपूर्ण दिव्य जीवन जीने के बापूजी के संदेश व कुंजियाँ पहुँचायी हैं। इस पत्रिका ने भारतीय संस्कृति के विरुद्ध चल रहे षड्यंत्रों का भी पर्दाफाश किया है। बापूजी से प्रार्थना है कि जब तक यह जीवन रहे, इसी प्रकार से यह सेवा करने का सौभाग्य मुझे मिलता रहे।

परमात्मस्वरूप पूज्य बापूजी को मेरे कोटि-कोटि नमन !

- उमेश शशिकांत कोठारी
कांदीवली (प.), मुंबई
मो. : ९८६७९७३१४७ ☐

अमृतबिंदु

- पूज्य बापूजी

* आपके मन में अथाह सामर्थ्य है। आप जैसा संकल्प करते हो समय पाकर वैसा ही वातावरण निर्मित हो जाता है। मानव चाहे तो संकल्प से दूसरी सृष्टि भी बना सकता है किंतु विषय-विकारों में गिरकर अपनी शक्ति को खो देता है।

* जीवन में जितना संयम और वाणी में जितनी सच्चाई होगी उतनी ही तुम्हारी और तुम जिससे बात करते हो उसकी आध्यात्मिक उन्नति होगी।

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

'सामूहिक प्राकृतिक होली शृंखला-२०१३' द्वारा लाखों लोगों पर गंगाजल, गुलाबजल तथा नीम व तुलसी की पत्तियों का अर्क मिश्रित पलाश का उत्तम स्वास्थ्यकारी रंग प्रति व्यक्ति ३० से ६० मि.ली. से भी कम मात्रा में छाँटकर पूज्य बापूजी ने देश की स्वास्थ्य व जल सम्पदा की सुरक्षा की । साथ ही ब्रह्मवृक्ष पलाश के वृक्षों की महत्ता उजागर कर देश की वन-सम्पदा की भी आर्थिक उपयोगिता जग-जाहिर की है । इससे आयी क्रांति के बारे में संतश्री बोले : ''जहाँ वृक्ष कट रहे थे, फूल-पत्ते वन में ऐसे ही सूख जाते थे, जल जाते थे, वहाँ वृक्षों की सुरक्षा हो गयी क्योंकि कमाईवाले वृक्ष (पलाश) हैं । उनकी गोंद, फूल-पत्ते आदि से कमाई होती है । और हमने पलाश की महिमा बतायी तो आदिवासियों के लिए तो मानो 'पलाश वृक्ष पैकेज' आ गया । कई आदिवासियों को रोजी मिली, कई लोगों के रोग मिट रहे हैं, कई लोगों को सेवा मिल रही है ।''

इन लोकसंत ने एक ओर देश के लघु उद्योगों को नवजीवन प्रदान किया है तो दूसरी ओर रासायनिक रंगों तथा उनसे उत्पन्न बीमारियों के पीछे होनेवाली करोड़ों-अरबों रुपयों की बरबादी से विश्वमानव को बचाया है । परंतु जिनकी दृष्टि के सामने स्वार्थ और हिन्दू धर्म के प्रति द्वेष का पर्दा लगा होता है, वे ऐसे महापुरुषों के गुणों को भी दोष के रूप में देखते हैं और हित को भी अहित के रूप में पेश करते हैं । इस वर्ष के होलिकोत्सव में गत वर्ष से बहुत अधिक जनता उमड़ पड़ी थी ।

सूरत में होलिकोत्सव की पूर्णाहुति सुसम्पन्न कर पूज्य बापूजी २७ मार्च (शाम) को रजोकरी आश्रम, दिल्ली में एकांतवास हेतु पधारे । २९ मार्च से ३ अप्रैल तक देहरादून, ऋषिकेश व हरिद्वार तथा ४ व ५ अप्रैल को पुनः दिल्ली में पूज्यश्री एकांत की मस्ती में रहे । इन दिनों भी सत्संग के पिपासुओं को अल्प समय में आत्मोत्थान की सरल कुंजियों से परिपूर्ण तात्त्विक सत्संग देकर कृतार्थ किया ।

पूज्य बापूजी के सद्गुरुदेव भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के प्राकट्य दिवस का सत्संग-कार्यक्रम **६ व ७ अप्रैल खारघर (नवी मुंबई)** वासियों की झोली में गया । पूज्यश्री ने सत्संग में कहा : ''मेरे गुरुजी की त्रिलोकहितैषी संकल्पशक्ति ऐसी गजब की थीं कि नीम के पेड़ को आज्ञा दी और वह चल पड़ा । तो मुसलमान भाई भी उनके भक्त हो गये और बोले : 'आप लीलाराम नहीं, लीलाशाह हो ।' तब से मेरे गुरुदेव का नाम पड़ा साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ।''

बाहर की मिठाई मुँह को मीठा करती है पर भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी की मिठाई (आत्मानंदप्रद भगवद्-सत्संग) तो दिल को ही मीठा बना देती है । पूज्यश्री ने अपने गुरुदेव के प्राकट्य दिवस के शुभ अवसर पर सत्संगियों को गुरुप्रसाद की मधुर मिठाई तो खिलायी ही, साथ ही सबको स्वास्थ्यरक्षक व गर्मियों में शीतलताप्रद पलाश-शरबत पिलाकर मुँह भी मीठा करवाया ।

बापूजी एक, चेटीचंड एक, दर्शन-सत्संग चार !

कल्याण (महा.) के भक्तों की विशेष प्रार्थना पर पूज्य बापूजी ने इस बार चेटीचंड महोत्सव का कार्यक्रम **९ से ११ अप्रैल (सुबह)** तक उनकी झोली में डाल दिया । यहाँ चेटीचंड के दिन दीप प्रज्वलित कर पूज्यश्री ने सिंधी समाज द्वारा आयोजित झूलेलालजी की विशाल शोभायात्रा का शुभारम्भ किया ।

मायानगरी में तनावभरी जिंदगी जीनेवालों को निश्चिंत जीवन की कुंजियाँ देते हुए बापूजी बोले : ''नियमित थोड़ा योगाभ्यास करें, शाकाहारी भोजन करें, सदाचरण करें, संतजनों का संग करें, नियमित भगवत्प्रीति, शांति व भगवद्-आनंद में गोते मारें और स्वस्थ एवं सुव्यवस्थित होवें, भगवन्नाम-जप करते हुए हाथ ऊँचे करके हास्य-प्रयोग करें तो सारे-के-सारे तनाव छू ! जीवन धन्य-धन्य हो जायेगा ।'' विदाई की वेला में हेलिकॉप्टर द्वारा सत्संगियों पर हुई पुष्पवर्षा से सभीके हृदय आनंद-उल्लास से भर गये ।

इसके बाद **दोपहर ३ बजे** संतश्री पहुँचे **अहमदाबाद हवाई अड्डे** पर । यहाँ भक्तों ने ढोल-नगाड़े एवं जयघोष ध्वनि के साथ शाही मुकुट अर्पण कर महाराजश्री का शाही स्वागत किया । वहाँ भक्तों को दर्शन देकर बापूजी पहुँचे **सरदार नगर, अहमदाबाद** । यहाँ सिंधी समाज द्वारा निकाली गयी विशाल शोभायात्रा के शाही रथ में विराजमान पूज्य बापूजी, रथ के आगे-पीछे झूमता-गाता भक्तों का विशाल समूह और पुष्पवर्षा द्वारा महाराजश्री के स्वागत का अनुपम दृश्य देखते ही बनता था ! यह शोभायात्रा पहुँची झूलेलाल मंदिर, जहाँ दीप-प्रज्वलन, वरुणावतार का तात्त्विक सत्संग तथा चेटीचंड की बधाइयाँ देकर पूज्यश्री ने भक्तों को परितृप्त किया ।

एक ही दिन में ३-३ जगहों पर कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद भी विश्राम किये बिना पूज्य बापूजी ने अपने चौथे कार्यक्रम में सत्संग का अमृतपान कराया **अहमदाबाद आश्रम** में इंतजार कर रहे भक्तों को । यहाँ 'आयोलाल-झूलेलाल' के जयकारों के साथ नाचते-गाते पहुँचे सिंधी पंचायतों के धर्मप्रेमियों ने पूज्य बापूजी के श्रीमुख से झूलेलालजी का आत्मिक-तात्त्विक ज्ञान पाया तथा पूज्यश्री को वरुणावतार की वेशभूषा में देखने की अपनी ख्वाहिश पूरी कर वे आनंद-रस में सराबोर हो गये ।

इस महोत्सव के उपलक्ष्य में भंडारे का आयोजन भी हुआ । उपस्थित श्रद्धालुओं तथा सजीव-प्रसारण के माध्यम से जुड़े १६७ देशों के भक्तों को अपने गुरुदेव से तादात्म्य स्थापित करने का अनुपम साधन बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''गुरुमूर्ति के सामने १५ से २५ मिनट रोज एकटक देखकर ॐऽऽऽ... का दीर्घ गुंजन करो तो कुछ ही दिनों में गुरुमूर्ति से गुरु प्रकट हो जायेंगे, बातचीत करेंगे । चाहोगे तो गुरुजी के साथ भगवान भी प्रकट होते हैं ।''

१४ अप्रैल तक आयोजित इस 'चेटीचंड ध्यानयोग शिविर' में देश-विदेश से आये भक्तों को पूज्यश्री ने ब्रह्मज्ञान के सत्संग से अंदर की शीतलता तथा पलाश, तरबूज, आँवला, आम आदि का बहुगुणकारी, स्वास्थ्य व शीतलता देनेवाला शरबत-रस पिलाकर बाह्य शीतलता से भी परितृप्त किया ।

इसके बाद शुरू हुआ **मध्य प्रदेश** में सत्संगों का सिलसिला ! नवरात्रि के शुभ अवसर पर **देवास** में **१५ (शाम) से १७ अप्रैल (दोपहर)** तक हुए सत्संग समारोह में तनावों से बचने की कुंजी बताते हुए बापूजी बोले : ''भगवद्-सत्संग, भगवद्-कीर्तन, भगवद्-ध्यान, भगवद्-साधना में तीनों तनावों (शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक) को दूर कर भगवद्-रस, भगवद्-आनंद और भगवद्-सामर्थ्य जगाने की व्यवस्था है ।''

१७ (शाम) व १८ अप्रैल (सुबह) को **शाजापुर** तथा **१८ (शाम)** को **ब्यावरा, जि. राजगढ़** के सौभाग्यशालियों को पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ । जि. शाजापुर में **१९ अप्रैल (सुबह)** को **सोयत** व **१९ (शाम)** को **आगर** तथा **२० (शाम) व २१ (सुबह)** को **रतलाम** के भक्तों को ब्रह्मज्ञान की, प्रभु-प्रसाद की प्यालियाँ पिलाकर पूज्यश्री **२१ (शाम)** को सत्संग-कार्यक्रम हेतु **रंगाराखेड़ी, जि. धार** पहुँचे । ❑

❊ पूज्य बापूजी के आगामी सत्संग कार्यक्रम ❊

दिनांक	स्थान	सत्संग स्थल	सम्पर्क
२४ व २५ अप्रैल (सुबह तक)	वापी (गुज.) (पूर्णिमा दर्शन व सत्संग)	ओवरब्रिज के पास, कस्टम रोड, वापी (पश्चिम)	९९७८४९१६६७, ९९७८४८६१८३
२५ (सुबह ११ बजे) से २६ अप्रैल	गुड़गाँव (हरि.) (पूर्णिमा दर्शन व सत्संग)	लेजर वैली ग्राउंड, इफ्को चौक, मेट्रो स्टेशन के सामने, सेक्टर-२९	९९९९९३६०५०, ९८११५२०९९९
२५ से २७ मई	हरिद्वार (उत्तराखंड) (पूर्णिमा दर्शन व सत्संग)	पंतद्वीप मैदान, भीमगौड़ा	९३६८२१३००८, ९८९७८०४४७४

चेटीचंड शोभायात्रा, अहमदाबाद

चेटीचंड महोत्सव, कल्याण (महा.)

खारघर (नवी मुंबई) में सत्संग

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2013

पूज्य बापूजी जागरण का शंखनाद कर रहे हैं...

''देश भर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम राष्ट्रीय कर्तव्य है, जिसने हमारे देश को आज तक जीवित रखा है और इसके बल पर हम उज्ज्वल भविष्य का सपना देख रहे हैं... उस सपने को साकार करने की शक्ति-भक्ति एकत्र कर रहे हैं। पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, सर्वधर्म-समभाव की शिक्षा दे रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं तथा अच्छे और बुरे में भेद करना सिखा रहे हैं। हमारी जो प्राचीन धरोहर थी और जिसे हम लगभग भूलने का पाप कर बैठे थे, बापूजी हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर उसको फिर से हमारे सामने रख रहे हैं।'' – श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन प्रधानमंत्री

पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है

''मैं अपना शीश झुकाकर परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के चरणों में शत-शत प्रणाम करता हूँ। इतनी बड़ी हेलिकॉप्टर दुर्घटना हुई और बापूजी और उनके शिष्यों का बाल भी बाँका नहीं हो पाया। हमारे परम पूज्य बापूजी को दैवी शक्ति प्राप्त है। परमात्मा ने उनके अंदर जो शक्ति समाहित की है, उसीका यह करिश्मा था। उसीका यह परिणाम था कि बापूजी और उनके किसी भी साधक को रंचमात्र भी चोट नहीं लगी। क्षणभर में ही बिल्कुल सही-सलामत हमारे सबके आस्था व विश्वास के केन्द्र परम पूज्य संत आशारामजी बापू अपने शिष्यों के साथ हेलिकॉप्टर से बाहर आये और आज हम सभी लोग अपने चक्षुओं से उनका प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे हैं।''

– श्री राजनाथ सिंह, भा.ज.पा. के राष्ट्रीय अध्यक्ष

आप समाज की सर्वांगीण उन्नति कर रहे हैं

''आज के भागदौड़ भरे स्पर्धात्मक युग में लुप्तप्राय-सी हो रही आत्मिक शांति का आपश्री मानवमात्र को सहज में अनुभव करा रहे हैं। आप आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा समाज की सर्वांगीण उन्नति कर रहे हैं व उसमें धार्मिक एवं नैतिक आस्था को सुदृढ़ कर रहे हैं।''

– श्री कपिल सिब्बल, केन्द्रीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

आपने दिव्य ज्ञान का प्रकाशपुंज प्रस्फुटित किया है

''आध्यात्मिक चेतना जाग्रत और विकसित करने हेतु भारतीय एवं वैश्विक समाज में दिव्य ज्ञान का जो प्रकाशपुंज आपने प्रस्फुटित किया है, सम्पूर्ण मानवता उससे आलोकित है। मूढ़ता, जड़ता, द्वंद्व और त्रितापों से ग्रस्त इस समाज में व्याप्त अनास्था तथा नास्तिकता का तिमिर समाप्त कर आस्था, संयम, संतोष और समाधान का जो आलोक आपने बिखेरा है, सम्पूर्ण समाज उसके लिए कृतज्ञ है।''

– श्री कमलनाथ, संसदीय कार्य मंत्री

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. ✻ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ✻ Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.